अवतारों के शत्रुओं से लड़ाई

ॐ प्रकाशक :—

धर्म-संग्राम-कार्यालय

(देव-राक्षसों द्वारा तेज-हत किये हुए भू-लोक के उत्थान के निमित्त प्रकाशित)

लेख को राक्षसों की चोरी से सुरक्षित रखिये

ॐ पुस्तक मिलने का पता :—

योगेश्वर महात्मा श्री विज्ञान स्वरूप जी

धर्म-संग्राम-कार्यालय, युनिवरसिटी रोड, अस्सी-संगम, काशी।

ॐ पुस्तक मिलने का स्थायी पता :—

मुकाम—पिंडारी, डाक—हल्दी, ज़िला—बलिया।

मूल्य ॥)

ॐ लेख-भूमिका

(१) ॐ "अवतारों के शत्रुओं से लड़ाई" नामक इस लेख के आविष्कारक, लेखक एवं प्रकाशक योगेश्वर महात्मा श्री विज्ञान स्वरूप जी हैं। (२) आप लोगों को यह चेतावनी दी जाती है कि आप लोग अपने-अपने पास के लेखों को बहुत सावधानी से रखियेगा; क्यों कि देवराक्षस लोग, जिनसे महात्मा की लड़ाई हो रही है तथा जिनके गुप्त भेदों को आप लोगों को ज्ञात कराने वास्ते यह लेख लिखा गया है; बड़े शक्तिवान हैं। उनके दूत लोग सर्वत्र घूम रहे हैं; वे लोग मंत्र-तंत्र के बल से बार-बार हमारे पहले के लेखों को आप लोगों से अपने भेदों को छिपाने वास्ते स्वयं चुराते आ रहे हैं। बंद बकसों से रुपये व लेखों के चुराने की चाल से लेख बहुत कठिनाई से व बिलम्ब से छप रहा है। दूसरे, हमारे लोक-वासियों, से भी बुद्धि-प्रेरणा द्वारा चोरी करा लेते हैं। इसी प्रकार इन लोगों ने योगियों के बहुत से हस्त-लिखित अनुभवों को, आप को शक्ति-हीन करने वास्ते आप के लोक से अदृश्य कर दिया है। आप के प्राचीन ऋषीश्वर, मुनीश्वर एवं सद्ग्रंथों को इन्हीं लोगों ने लुप्त किया है। जब कभी अचानक लेख गुप्त हो तब यह समझ जाइये कि, देव-राक्षसों ने चोरी किया है। (३) यदि कहीं लेख में त्रुटि जान पड़े तो लेख से अश्रद्धा न करिये; क्यों कि महात्माओं के लेखों में भाव प्रधान होता है; न कि भाषा-व्याकरण। दूसरी बात यह है कि लेख लिखते समय और सुधारते समय राक्षस लोग मनोवाहिनी नाड़ी में इतनी संस्कारी गड़बड़ी करते हैं कि साधारण त्रुटि रह जाने में कुछ भी आश्चर्य नहीं है। शूल-दर्द सहते हुए लेख लिखा जाता है—यह दशा है। (४) चूँकि प्रत्येक युग के अवतार को इन ऊर्ध्व लोक-वासी देवों या देव-राक्षसों से अवश्य ही थोड़ा-बहुत युद्ध अपने लोक-वासियों से गुप्त या प्रकट कर के करना पड़ता है; हर बार अवतारों को ये लोग नीचा दिखाने का यत्न करते हैं; आप लोगों के कल्याण-कामी होने के कारण उनसे शत्रु-भाव रखते हैं; अतः इन शत्रुओं (राक्षसों) की पोल खोलने वाले इस लेख को "अवतारों के शत्रुओं से लड़ाई" का नाम दिया गया है। साथ ही उन्हीं की लड़ाई का वर्णन भी है। (५) आज कल कक्षा पाँच में, स्कूलों में "इतिहास-परिचय" नाम की पुस्तक में जो "अजन्ता की गुफा में भगवान् बुद्ध का मार-विजय" नामक चित्र दिया गया है, वही बुद्ध देव के साथ इन शरीर-प्रवेशक राक्षसों की लड़ाई का चित्र है। वैसी ही लड़ाई हमारे साथ चल रही है। काशी के पास सारनाथ के बौद्ध मन्दिरों की दीवालों पर भी उसी "बुद्धदेव" और "मार" नामी देव-राक्षसों के राजा की लड़ाई का बृहत् चित्र खींचा हुआ है। हर बार जो लेख या चित्र अवतारों और योगीश्वरों द्वारा लोक में उनका (राक्षसों का) भेद प्रकट करने वास्ते जनता को प्रदान किये जाते हैं, ये राक्षसगण उन्हें गुप्त और नष्ट कर-करा देते हैं। (६) यह शरीर और युद्ध किसी एक सम्प्रदाय में सीमित नहीं है; बल्कि उदासी, दंडी, नागा, सन्यासी, नाथ-पन्थी सर्व सम्प्रदायों की

शिक्षाओं के सम्मेलन द्वारा यह युद्ध चालू किया गया है। कोई भी एक सम्प्रदाय का योगी न तो इन चोरों को पकड़ सकता है; न इन्हें बिजय कर सकता है। अतः विभिन्न सम्प्रदायों के आचार्यों से सींचे हुए और अविनाशी पुरुष द्वारा संचालन किये हुए इस सम्प्रदाय का नाम अविनाशी सम्प्रदाय रखा गया है। यह सतयुग का समय है; पर सुधारकों के शक्तिहीन होने के कारण कलियुग बना हुआ है। इस धर्म-संग्राम द्वारा अपूर्व, विराट सतयुग का आवाहन किया जा रहा है। (७) युद्ध की बिधि या इस शरीर पर दुष्टों का अत्याचार—यह शरीर पूर्ण प्रबन्ध मिलने पर नीम की पत्ती एक सेर, तीन पाव पीकर 'ॐ' का ऊँचा जाप करने लगता है और राक्षस लोग भजन रोकने वास्ते शस्त्रों द्वारा पेट-पीठ-दिमाग-फेफड़ा-कलेजे का मांस काटने लगते हैं। हाथ-पैर से टेल-उलीच कर निद्रा और जागरण काल में भी वीर्य इन्द्रिय की राह बाहर गिराने लगते हैं। कभी-कभी बड़ी-बड़ी संख्या में आ कर वीर्य और रक्त एकाएक सोख लेते हैं। भजन के समय नेत्र वाली नाड़ी अवरोध एवं मुख में टट्टी-पिशाब की वृष्टि आदि अत्याचार करते हैं। (८) चूँकि ये देव-राक्षसगण ब्रह्म-भक्तों की मुख्य कर के हत्या करने वाले हैं; अतः इन्हें ब्रह्म-राक्षस भी कहते हैं। प्राचीन काल से आज तक करोड़ों ब्रह्म-भक्तों को इन्होंने नाना प्रकार की बीमारी और यातना दे कर मार डाला है। ब्रह्म-भक्त और उसमें भी स्वतंत्र हठयोगी इनके प्रधान शत्रु हैं। हठयोग की सारी आपत्ति, बिघ्न और कठिनाई अधिकाधिक इनके कारण से है। मगर इनकी बुद्धि-प्रेरणा से योगियों द्वारा ही शंका और दोषारोपण बिचारे, परोपकारी, निर्दोष प्राणायाम और षटकर्म पर ! देश की दुर्गति देख कर उसे सुधारने की इच्छा वाले करोड़ों परोपकारी योगी लोग इनके कारण मृत्यु के मुख में चले गये। अभी हिमालय के प्रान्तों में कई योगी, जब कि मैं भी इनके आक्रमण से ग्रस्त था, इन राक्षसों के कारण मृत्यु की बाट देखते हुए पाये गये। सच्चे योगियों को बुद्धि-प्रेरणा द्वारा बार-बार विष इन्होंने दिलवाये हैं। आज-कल की भजन-मार्गियों की लगभग सभी बीमारियाँ और बिघ्न इनके उत्पन्न किये हुए हैं।

इस महा निर्दोष-हत्या को देख कर यह धर्म-संग्राम धर्म का झंडा ले कर देव लोक पर भयंकर ब्रह्म-लूक गिराने को उठ खड़ा हुआ है ! देव लोक-निवासिनी, शरीर-प्रवेशक महेश्वरी मर्यादा का समूल सर्वनाश हो—यही इसकी ध्वनि है ! पत्थर से मारी हुई खेती के समान तेज-हत किया हुआ भू-लोक और अति आहत हुई भारत-भूमि धैर्य धारण करो !

---

* ॐ शिवोऽहं *

॥ ॐ धर्म-संग्राम-परिचय-प्रारंभः ॥

ॐ अवश्य पढ़िये, आपके सबसे गुप्त शत्रुओं की पोल खोल दी गई !

ॐ भारत में महा अलौकिक, अति गुप्त, महा आश्चर्य-जनक, सर्वथा सत्य घटना !

ॐ सूक्ष्म लोकों के लगभग पचास सौ करोड़ ब्रह्म-राक्षस बने हुए चोरों व गुंडों की महान ढिठाई ! ॐ आपके अवतारों पर चोरों का अधिकार !

ॐ समस्त भूमंडल की आपत्ति का मुख्य कारण :—

आप भू-लोक-वासियों को यह गुप्त बात योगवल द्वारा ज्ञात कर बताई जाती है कि नरसिंह अवतार के समय से, लगभग एक कल्प पूर्व से भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जन लोक, तप लोक, आदि सात ऊपरी सूक्ष्म सृष्टि वाले सूक्ष्म लोकों के अवारे, लुटेरे, वर्णसंकर, गांडू, कुल्टे, नीच, अछूत, निरुद्यमी, चोर, मजदूर दल (नीची जाति व नीचा पेशा) वाले लोगों ने मजदूरी यानी परिश्रम (सच्ची कमीनी) साथ जीविका (रोजी) कमाना छोड़कर आपके लोक (दुनियां) के प्रायः सभी देश-वासियों के शरीरों में नाक-कान की राह (अपने लोक से आकर) गुप्त रूप से प्रवेश कर लिया है। आप लोगों के शरीरों में ही इनका चौबीस घंटा ठीक उसी प्रकार निवास हो रहा है जैसे पेड़ पर बन्दरों का निवास होता है। यहां वे लोग अति आवश्यक आपके रक्त-वीर्य-रज, शूल द्वारा प्राप्त नरम मांस (गूदा), पेट में खाये हुए दूध-घी-मीठा और अन्न के सूक्ष्म रसों को पीकर अपना जीवन-निर्वाह कर रहे हैं। इनमें देवता-दैत्य-माया, ईश्वर-शक्ति-सिद्ध नामी छः जातियों के लोग सम्मिलित हैं। कुछ लोग अपने को जीन, मरूही, यक्षिणी आदि भी बतलाते हैं। आपके अधिकार से वाहर बलवान होने के कारण ये लोग आप लोगों को नाना (बहुत) उपायों द्वारा तंग कर, विविध युक्तियों और बीमारियों द्वारा कष्ट में डालकर अपने स्वार्थ-रक्षा वास्ते देवता-देवी-ईष्ट, बनावटी भगवती, काली-माता के नाम से पूजा भी ले रहे हैं। तुलसीकृत रामायण में उत्तर काँड में इन्हीं चोरों को— "इन्द्रिय द्वारा झरोखा नाना। जहँ तहँ 'सुर' बैठहिं करि थाना॥ आवत देखहिं विषय बयारी। हठ करि देहिं कपाट उघारी॥ इन्द्रिय सुरन्हि न ज्ञान (यानी धर्म) सुहाई। भोग-विलास (यानी पाप) पर प्रीति सदाई॥" की चौपाई द्वारा समझाया

गया है। रामायण के पद में देव योनि के होने से इन चोरों को 'सुर' नाम से कहा गया है; अर्थात् ये देव योनि यानी सुर योनि के राक्षस हैं। लेकिन आप लोग 'सुर' शब्द सुनते ही इन्हें देव के बदले देवता जान कर पूजन करने को तैयार हो जाते हैं। ये महा मूढ़, भोगी, राक्षस, पर-द्रोही लोग आपके लोक में (प्रत्येक व्यक्ति के शरीर में) पहले से संख्या में बहुत अधिक बढ़ जाने के कारण बड़ी उत्पात्-ढिठाई मचाये हुए हैं। बड़े-बड़े विद्वानों, अमीरों, योगियों, महात्माओं के पागल बनाने, मारने में इनका विशेष जोर बढ़ रहा है। किसी महा पुरुष को पागल करना, नरम मांस वास्ते पेट में शूल देना और शूल का कारण दूसरा ही दूसरा बतला देना—आज कल इनकी प्रधान लीला-नाटक हो रहा है। इनको शरीर से बाहर निकालने, मारने या अधिकार करने की बस एक ही उपाय भजन-बल या धर्म-बल यानी योग-शक्ति है। यह परमेश्वर की प्रसन्नता से भजन के माप के अनुसार प्राप्त होती है। इस उपाय के प्राप्त करने वाले योगी यानी अवतार लोग हैं। अतः ये चोर लोग अपने शत्रु इन धर्म-रक्षक पुरुषार्थी योगियों यानी अवतारों को सदा ही बड़ी खोज में रहते हैं। इस कारण योग-शक्ति प्राप्त करने की मुख्य उपाय योग-समाधि पर दूतों का पहरा बैठाय समाधि में नाना प्रकार के विघ्न बड़ी गहन युक्तियों साथ करते-कराते हैं। नये दुर्बल योगी की तो बात ही क्या कही जाय; आपके बर्तमान कालीन सभी अवतारो पुरुष लोग भी इनके सामने बलहीन हो रहे हैं! इनके मुख्य उपाय-केन्द्र आप लोगों के अंतःकरण यानी मन उत्पन्न होने का स्थान है। यहाँ ये लोग बारी बाँध कर २४ घंटे पहरा देते हैं। मन का जाँच करते रहना, समाधि या शुभ कर्म रोकते रहना, मन में पाप-व्यभिचार की बात घुसेड़ते रहना—आदि काम करते रहते हैं। आप लोगों की बुद्धि को उनकी चोरी की बात जानने से विरुद्ध घुमाये रहते हैं। आप लोगों को धर्मविहीन, परमेश्वर से दंडनीय बना कर अपने रक्त पीने योग्य बनाये रखना ही उनका मुख्य व्यापार है। क्योंकि परमेश्वर आपके धर्म-भजन के माप अनुसार ही उन्हें आपके शरीर से बाहर भगाने का यत्न या परिश्रम करेंगे। इनमें प्रायः आपके जगत के डोम, चांडाल, चमार, दुसाध, भर आदि जातियों के समान अति नीची जाति वाले लोग हैं, जो अवतारों या पुरुषार्थी योगियों से लड़ाई में विजय या रक्षा वास्ते अपने जगत के ऊँची श्रेणी के लोगों से भक्ति-गुलामी रूप घूस देकर मिले रहते हैं। इन ऊँचे लोगों में नौ दुर्गा (यहाँ दुर्गा नाम से आदि महा दुर्गा 'ब्रह्म-शक्ति' नहीं, बल्कि दुर्गा पद या पदवी पाने वाली तपस्विनी स्त्रियाँ हैं। आन्तर जगतों में दुर्गा की उपाधि वाले बहु संख्यक लोग हैं, जो आप लोगों को धोखा देने वास्ते दुर्गा शक्ति बन बैठे हैं।), काली,

ब्रह्म-गायत्री, इच्छा-शक्ति, महामाया, भगवती आदि मुख्य हैं, जो दोनों ओर (शरीर-प्रवेशक चोर और आप लोग यानी मृत्यु-लोक-वासी) से पूजा-ऐश्वर्य लूटते हैं एवं मानव रक्त-शोषक होने और परमेश्वरीय कार्य के विरोधी होने के कारण अपने को सनातन या हिन्दू धर्म से अलग महाईश्वरी धर्म के कहते हैं। अतः ब्रह्म-हत्या यानी आपके धर्म-भजन के विरोध करने के कारण परमेश्वर से दंडनीय हैं। अति दीर्घ काल से आप लोगों के जप-तप-योग भ्रष्ट करते-करते उनके महा पाप के फल रूप उनके दंड का समय आ पहुँचा। उसी का यहाँ वर्णन हुआ है। इन्हीं दुष्टों के शासन करने या दंड करने या उनकी दुष्टता के अन्त करने में जो संघर्ष (युद्ध) करना पड़ रहा है, उसी को यहाँ "धर्म-संग्राम" के नाम से कथन किया गया है। इसी युद्ध के प्रकाश करने वास्ते यह धर्म-संग्राम का झंडा एवं त्रिशूल धारण किया गया है, जो लाल स्कार्फ या साफे के साथ में परमेश्वरीय पुलिस या धर्म-रक्षक का बोधक है। युद्ध के विशेष कामों में जब कि राक्षस लोग लोगों से बुद्धि-प्रेरणा द्वारा युद्ध के कामों का विरोध कराने वास्ते तीव्र संस्कार लगाते हैं, झंडा का प्रयोग किया जाता है; ताकि शक्ति लोगों की बुद्धि में झंडा का संस्कारी संकेत करके उन्हें धर्म के पक्ष में प्रभान्वित कर सके; युद्ध के साधारण कार्यों में त्रिशूल हस्त-ग्रहण होता है।

ॐ लौकिक सम्राटों को ठीक रास्ते पर लाने वाले शक्तिवान् महासिद्ध योगियों या ऐश्वर्यधारी अवतारों के भारत-भूमि से लोप का कारण :—

इन शरीर में घुस कर रक्त पीने वाले लोगों के अनन्त वर्षों से गुप्त संस्कारों द्वारा भोग-मोक्ष-कष्ट-अप्रतिष्ठा और झगड़ा आदि की युक्ति लगा-लगा कर शक्तिवान योगियों, महासिद्धों, अवतारों पर गुप्त आक्रमण करने का ही फल है कि योग-शक्ति-सम्पन्न, संसार को कल्याण-मार्ग दर्शाने वाले वे योगेश्वर लोग आपके

ॐ नोट :—इन्हीं ऊर्ध्व लोक-वासी शरीर-प्रवेशकों की विराट, हिरण्य गर्भ, ईश्वर नाम की तीन गवर्नमेन्टें और बहु-संख्यक छोटी रियासतें आपके लोक पर अंग्रेजी गवर्नमेन्ट की भाँति राज्य कर रही हैं। उनके पुलिस लोग नाक-कान की राह आपके हृदय पर पहरा देते हुए आपकी आत्म-शक्ति (धर्मोन्नति) को रोकते हैं। धर्म-संग्राम उन सभी को भगा रहा है। राक्षसों द्वारा मन में पाप-प्रवेश, पाप-प्रवेश से धर्म-हानि, धर्म-हानि से योग-शक्ति-हानि, योग-शक्ति-हानि से देश-हानि एवं सारे भू-मंडल के गुरू भारत-देश की हानि या धर्म-हानि से भू-लोक की हानि हो जाती है। अतः इस शरीर-प्रवेश के, सारे भू-लोक से हटाव होने के कारण धर्मोद्धार, देशोद्धार, लोकोद्धार—तीनों सिद्ध होते हैं। अतः धर्म-संग्राम सर्व को माननीय है।

देश यानी जन्म-भूमि और अपनी तपोभूमि को सर्वदा के लिये त्याग कर पुण्य-भूमि भारत से लुप्त हो गये। अमरत्व का लक्ष्य लेकर, प्रथम जन्म में तपस्या पूर्ण कर दूसरे जन्म में कृष्ण नाम से अवतरित होने वाले भगवान कृष्ण और अमरत्व चाहने वाले योगीश्वर नानक जी गुप्त संस्कारों द्वारा मोक्ष को; महासिद्ध, योगीश्वर गोरक्ष नाथ अप्रतिष्ठा द्वारा बिदेश को भगाये गये। लौकिक सम्राटों को अपनी अजेय शक्ति द्वारा धर्म-मार्ग (शान्ति-मार्ग) पर लाने वाले, उन्हें एक शृंखला रूप शासन में बाँधने वाले इन्हीं योगेश्वरों के न रहने के कारण आज सम्राट-मंडली में अशान्ति और प्रजा-मंडल में भी धर्म व परमेश्वर पर अविश्वास फैला हुआ है। सम्राटों के अशान्त होने से जनता भी महा अशान्ति व कष्ट (लड़ाई-भिड़ाई और महँगी का कष्ट) सहन कर रही है। वर्त्तमान युग में शान्ति-मार्ग दर्शाने वाले महात्मा गाँधी और योग-शक्ति द्वारा शान्ति करने वाले भगवान् कल्कि के लक्ष्य की प्राप्ति के मार्ग में महा विघ्न व विलम्ब होने के सबसे गुप्त और मुख्य कारण भी ये ही स्वार्थी लोग हैं। इसका भेद बहुत गुप्त है, जो महात्मा के द्वारा ही ज्ञात हो सकता है। मगर इतनी बात दृढ़ सुनिश्चित् है कि पूर्ण और अन्तिम रक्षा योग-शक्ति से ही प्राप्त होगी; फौजी शक्ति से कदापि नहीं। इसका कारण यह है कि वर्त्तमान युग में आपका जीवन सबसे अधिक कष्ट और संकट में एवं दुर्गति के मार्ग में इस हमारे लेख में वर्णन किये गये, देव लोक के, देव-योनि के परमेश्वर-द्रोही ब्रह्म-राक्षसों के कारण से है; ये ब्रह्म-राक्षस आज कल के गवर्नमेंटों के किसी भी फौजी अस्त्र-शस्त्रों से बध नहीं किये जा सकते; इन पर केवल (पूर्ण रूप से) योग-शक्ति (आदि पुरुष, सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी परमेश्वर की शक्ति) ही काम कर सकती है; इसी लिये फौजी शक्ति से पूर्ण रक्षा नहीं कही गई।

ॐ सूक्ष्म जगतों के इन गुप्त शरीर-प्रवेशक, रक्त-वीर्य की चोरी करने वाले दुष्टों को समाधि और धर्म की हानि करने से लाभ और आप लोगों के ऊपर उनके अन्य अत्याचार :—

जैसा कि ऊपर लिखते आये हैं आपके धर्म-भजन-समाधि के नष्ट करने से आप लोगों को योग-शक्ति (सिद्धि) यानी परमेश्वरीय कृपा प्राप्त नहीं होने पाती, जिससे आप लोग इन लुटेरे गुंडों को अपने शरीर के जीवनाधार रक्त-वीर्य को लूटने-पीने से रोक नहीं सकते। पुरुषार्थी (समाधि-प्रेमी) योगी यानी धर्मोद्धारक अवतार लोग जो आप लोगों के ही घरों से उत्पन्न होकर महा कष्ट-सहन द्वारा योग-बल प्राप्त करने को उद्यत होते हैं, उन्हें अपने पूर्वजों (गुरु-आचार्य) से

शीघ्रता और आसानी से योग का ठीक (देव या ईष्ट की गुलामी से रहित पूर्ण और स्वतन्त्र एवं सच्चा) मार्ग नहीं मिलने पाता कि वे शीघ्र व अच्छी तरह से अपने देश का भीतरी (सूक्ष्म जगत् सम्बन्धी) और बाहरी (निज लोक सम्बन्धी) सुधार पूर्ण रूप से कर सकें। इस प्रकार धर्म-हानि या योग-समाधि में बिघ्न करने से, योगियों को योग-भ्रष्ट कर देश को योग-शक्ति से हीन किये रहने से इन लुटेरे लोगों को प्रत्येक युग में धर्मोद्धार के समय बहुत कुछ रक्षा मिल जाती है। कुछ अवतार लोग इन चोरों का पूर्ण भेद न पा सकने के कारण इनसे बहुत ही धोखा खा जाते हैं। कहाँ तक लिखा जाय, बनावटी देवी, देवता, भगवती, शक्ति आदि का नाम ले-ले कर धूर्तता करने वाले, शरीर में घुसकर ओट (परदे) से बात करने वाले इन्हीं धूर्तों की फेर में पड़कर वे अवतार लोग इन्हें अपने लोक में स्वयं अपना ईष्ट मान कर अपने अनुगामी लोक-वासियों वास्ते भी ईष्ट-पद दे जाते हैं। ये कपटी, रक्त-वीर्य की चोरी द्वारा अपना अपना आहार-लाभ करने वाले शरीर-प्रवेशक लोग अवतार लोगों से गुप्त पूजा-भक्ति लेकर उन पुरुषार्थी लोगों को उनके लोक में कञ्चन-कामिनी का बृहत् इनाम आप लोगों से ही बुद्धि घुमा कर प्राप्त करा देते हैं। 'भौमासुर' नामी राजा (जिसका बर्णन भागवत में है) का १६,१०० राज-कन्या की चोरी रूप राक्षसी कर्म इन्हीं (देव या ब्रह्म-राक्षस) लोगों के कारण हुआ, जिसके फल स्वरूप भगवान् कृष्ण को शरीर-त्याग करना पड़ा। पुरुषार्थी योगी को निर्मल समाधि का लक्ष्य त्याग कर इस कञ्चन-कामिनी को स्वीकार करने वास्ते समाधि के अभ्यास-काल में बिघ्नों द्वारा इतना कष्ट दिया जाता है कि उस बिचारे को बलात् भोगासक्ति स्वीकार करनी ही पड़ती है। कितने आश्चर्य, लज्जा, निचाई की बात है कि आप के लोक का पूर्ण ब्रह्म सूक्ष्म जगतों के नीचों की शरण में! अगर भोग की ही लालच है तो अर्थ-धर्म-काम-मोक्ष सर्व के भांडार परमेश्वर से कहिये। देव योनि के इन 'देवता' नाम-धारी धूर्तों से आप को अनन्त हानि! क्योंकि बनावटी रूप और नाम दर्शाने वाले करोड़ों लोगों में जो आप से प्रत्यक्ष नहीं मिलते, आप को क्या पता कि यह बात आदि शक्ति की है और यह बात सूक्ष्म जगत् (देव लोक) के डोमड़े की? अवतारों के भोगासक्त होने के कारण उनका अनुगामी सारा देश अधिकाधिक भोगी होकर इन चोरों का खाद्य (आहार) या पशु बन जाता है। ये शरीर-प्रवेशक लोग शरीर में रहकर महा महा घृणित आचार द्वारा आप का शरीर भीतर से अति अपवित्र मुर्गी-खाना या सूकर-खाना समान बनाये रहते हैं। आप के रक्त-वीर्य में, नाड़ी-जाल में अपना बिष्ठा-पिशाब, थूक-खँखार आदि गन्दगी मिला कर, शरीर के भीतर दौड़-धूप करना,

खाया हुआ आहार हिलाना-डुलाना-उलीचना आदि मन-मुखी क्रीड़ा द्वारा एवं नाड़ी बन्द करने द्वारा शरीर में हैजा-तपेदिक, थायसिस-शूल-पागलपन, नाड़ी-फेल, सुखंडी, जमुवाँ (सूक्ष्म जगतों के चोर राक्षस लोग ताजे रक्त-मांस के लाभ वास्ते सउरी के नवजात शिशुओं को युक्ति द्वारा प्राण-हत्या करते हैं। इसी को हमारे लोक में "जमुवाँ" कहते हैं।), चेचक, दम्मा आदि बीमारी पैदा करते रहते हैं। अधिकांश स्वप्न-दोष, प्रमेह आदि बीर्य की सारी बीमारियाँ इन दुष्टों की चलाई हुई हैं। गुंडे-बाजी, हस्त-मैथुन इन राक्षसों ने चलाया है; न कि युरोपियनों ने। नाना प्रकार के धर्म व सिद्धान्त आप के लोक में इन्होंने प्रकट किये हैं। इन राक्षसों ने ही कलि के सिद्धों-साधुओं को, बुद्धि-प्रेरणा द्वारा सब प्रबन्ध करके रंडी-लौंडों में गिरा दिया है। पूजा-वसूली वास्ते तक भी आप के लोक में बीमारी पैदा की जाती है और बीमारी पैदा करने वास्ते सूक्ष्म लोकों से कीड़े लाकर आप के शरीर के रक्त में डाले जाते हैं। आप के लोक के बहुतेरे मनुष्य बिना परमेश्वरीय इच्छा के अकारण नित्य-प्रति इन राक्षसों द्वारा कलेजा काट कर (अचानक दर्द के नाम पर) मारे यानी मृतक बनाये जा रहे हैं, पर आप लोग होनहार का दोष देकर संतोष कर रहे हैं। कितनी महान् दुष्टता है? यह है उनके अत्याचार का संक्षिप्त लेखा! योगी या अवतार लोग (जो सच्चे समाधि-प्रेमी होते हैं, सभी नहीं, कोई बिरला) इनकी यही दुष्टता अपनी समाधि द्वारा जान कर इन्हें अपने या दूसरों के शरीर में प्रवेश करने से रोकते हैं। इस कारण ये लोग घूम-घूम कर अपने शत्रु रूप समाधि के नष्ट करने वास्ते योगाभ्यास में विघ्न करते और लोक-कल्याण चाहने वाले योगियों के शक्ति-संयुक्त होने से पहले ही उनके लोकोपकार के भाव को उनके मन में से जान कर उन्हें विघ्न व कष्ट में डालने लगते तथा उनसे लड़ने लगते हैं। ठीक यही लड़ाई छिड़ी हुई है, जिसका वर्णन आगे लिखा गया है। इस "धर्म-संग्राम" नामी लड़ाई का एक ध्येय-विभाग यही है कि पुनः किसी योगी-तपस्वी के योग-तप में ऐसा राक्षसी, शरीर-प्रवेशक-कृत विघ्न आगामी समीपवर्ती युगों में न लगे। यह भी निश्चय-पूर्वक जानिये कि भूत कालीन (पहले के) जितने भी योगी-तपस्वियों के योग-तप में विघ्न-उत्पात् और भ्रष्टता सुनने में आती है, लगभग सभी में इन शरीर-प्रवेशकों का मुख्य हाथ रहा है, मगर बहाना दूसरे देवताओं का किया गया

ॐ नोट :—चाहे कोई कैसा हू बड़ा शक्तिशाली अवतार, योगीश्वर, महापुरुष होवे, बिना निराकार, सर्वज्ञ सनातन पुरुष के बताये अपार सृष्टि के अनन्त भेदों व घटनाओं को जान नहीं सकता। बिना पूछे या बिना आवश्यकता के सनातन पुरुष सभी को सब भेद बताते भी नहीं; यानी सर्वज्ञ केवल निराकार ॐ पुरुष ही हैं।

है। वर्तमान काल में भी भारत के लंगोटी वालों की सारी नाम-हँसी, निन्दा इन्हीं शरीर-प्रवेशक देव-राक्षसों के कारण से है।

ॐ ब्रह्म-केन्द्र यानी परमात्मा के हृदय में क्रोधाग्नि की प्रचंड ज्वाला :—श्री 'नारायण गिरि' नामी, सिद्ध हठयोगी, ब्रह्म-भक्त को अभी चन्द वर्षों में ही इन पूजा और रक्त के लोभी लोगों ने उसके दो शिष्यों साथ उक्त महात्मा के शरीर में गुप्त रूप से प्रवेश कर, उसे पागल बना कर, शूल देकर, 'बद्रीनाथ' के पास 'सतोपंथ' नामी बर्फीले, अति एकान्त स्थान में ले जा कर, कलेजा काट कर जान से मार डाला है। इस कारण ब्रह्म-पुरुष परमेश्वर ने अति क्रोधित हो कर इन ब्रह्म-हत्यारों को सर्ब देवी-देवता संयुक्त समूल विनाश करने का महा प्रण किया है। यह नभ-बाणी लेखक की गुफा पर, पिंडारी ग्राम में स्पष्ट रूप से हो चुकी है। ये लोग कलेजा के भीतर सूक्ष्म शस्त्रों द्वारा, भजन को (नाम-जप को) विघ्न द्वारा छुड़ा-भुला कर काट करते हैं। देह-रहित, सर्व-व्यापी, निराकार परमेश्वर देह-धारण की कानून (मर्यादा) नहीं प्राप्त होने के कारण उक्त सन्त की रक्षा नहीं कर सके हैं। मगर दुष्ट-दमन की प्रतिज्ञा अटल हो चुकी है। ५० सौ करोड़ के लगभग शरीर-प्रवेशक चोर और उनके पक्षपाती देव लोग काल की गाल में हो चुके हैं।

ॐ सर्ब शक्तिमान परमेश्वर की आज्ञानुसार बिश्व-बिजेता योगेश्वर महात्मा ब्रह्म-हत्यारे राक्षसों के दमन-मार्ग में :—

योगेश्वर महात्मा श्री विज्ञान स्वरूप जी (लेखक) के साथ इन ब्रह्म-हत्यारों का आज लगभग ४ बर्षों से (सन् १९४१ से) योग-भूमि 'पिंडारी', पोस्ट—हल्दी, जिला बलिया की पक्की गुफा पर महा भयंकर, भीषण, प्राण-घातक संग्राम छिड़ा हुआ है। दुष्ट लोग करोड़ों की संख्या में (योग-दृष्टि से दूसरों को भी दीख सकते हैं) विविध अस्त्र-शस्त्र (बरछी, भाला, कटारी, छुरी, गदा, पत्थर, ईंट, डंडा आदि) संयुक्त आ-आ कर, समाधि-काल में बलात् नाक-कान की राह शरीर के भीतर घुस कर कलेजे-फेफड़े-दिमाग पर हथियार प्रहार करते आ रहे हैं। दुष्टों का मुख्य दल चौबीस घंटा शरीर के भीतर हृदय के समीप बैठ कर गाली (माता-बहिन-परमेश्वर-गुरू आदि को गाली दी जाती है।) और दुष्टता-बृष्टि (पिशाब-टट्टी की बृष्टि) करते हुए समाधि की डिग्री पर पहरा दे रहा है। मुख में टट्टी-पिशाब किया जाता है। जहाँ डिग्री बढ़नी आरम्भ होती है कि शूल-प्रहार कर दिया जाता है, बस महात्मा को भजन का आसन छोड़ कर, गुफा से बाहर आकर

छटपटाना पड़ता है। यह युद्ध[†] महात्मा ४ बर्षों से आज तक अकेले करते आ रहे हैं। अवसर के अनुसार कभी परमेश्वरीय वाणी, कभी शक्ति-प्राकट्य भी होता रहता है। शत्रुओं के पक्ष में बड़े-बड़े सिद्धि-शक्ति, मंत्र-तंत्र एवं माया जानने वाले लोग हैं, जो हमारे जगत् के सिद्धों से भी लड़ने को तैयार हैं। उनका कथन है कि मृत्यु-लोक-वासियों का शरीर उनका खेत है या रस देने वाला ताड़-खजूर का पेड़ है*। प्यारे धर्मियों! ये ही हैं आप के सब से गुप्त, असली, घाती शत्रु!

ॐ परमेश्वर का दुष्टों को बध करने में बिलम्ब करने का कारण:—

ऐसे युद्ध के अवसर पर निराकार से साकार होने वास्ते परमेश्वर ने सृष्टि के स्थापन-काल में समाधि की एक मुख्य डिग्री निश्चित् किया है—यह गुप्त भेद शक्ति स्वयं प्रकट हो कर कह गई है। यही डिग्री (दरजा) दुष्ट लोग अपनी दुष्टता-उत्पात् द्वारा प्राप्त नहीं करने देते। यह सीधा, समाधि-अभ्यास द्वारा उक्त डिग्री प्राप्त कर दुष्ट-बध करने वास्ते शक्ति प्रकट (साकार रूप में) करने का प्रथम मार्ग था। दूसरी युक्ति, शक्ति के प्रकट होने वास्ते दुष्टों का इस शरीर को प्राण-घातक शूल देना है। मगर इसे भी दुष्ट लोग अपनी मृत्यु के भय से कि महा शूल देते ही महात्मा के "ॐ-ॐ" चिल्लाते हुए प्राण-त्याग करते देख कर परमेश्वरीय शक्ति शीघ्र प्रकट हो कर दुष्टों को विध्वंस कर देगी—प्रयोग नहीं करते। तीसरी युक्ति (मार्ग, कानून), सम्पूर्ण भू-मंडल में प्राण-रक्षा वास्ते दुष्टों से पीड़ित हो कर भयंकर हाहाकार (हाय, हाय) मच जाना है, जो अभी बहुत बिलम्ब से लागू होगी। चौथी युक्ति, बिघ्न-निवारण या शक्ति-प्राकट्य वास्ते, डिग्री प्राप्त किये हुए पूर्व काल के योगेश्वर और योगीश्वर लोग हैं। मगर ये लोग भारत से दुष्टों द्वारा लुप्त कर दिये गये हैं। पाँचवी, शीघ्रता से प्राप्त होने वाली युक्ति, दूसरे नये महात्माओं से भेद बताय, भजन करा कर डिग्री प्राप्त कराय शक्ति प्रकट कर लेनी है। मगर इस अन्तिम, नवीन-सिद्ध-उत्पादक युक्ति में महात्माओं के युक्त आहार, दूध, घी, अन्नादि वास्ते पर्याप्त रुपयों की आवश्यकता है। रुपया मिलने पर बिजय का यही सबसे आसान, शीघ्र का तथा प्रत्यक्ष मार्ग है। अनन्त सृष्टि में, परमेश्वरीय न्यायालय (कचहरी) में अभी तक यह समस्या (मुकदमा) सबसे प्रथम विचारणीय है। समस्या का अर्थ यहाँ, शक्ति प्रकट कर शरीर-प्रवेशक

[†] ॐ नोट:—इसी लड़ाई कारण पंजाब के 'गुड़गाँव' के पंडित द्वारा प्रकाशित 'चेतावनी' नामक पुस्तक की सन् १९४२ की प्रलय-घोषणा फेल कर दी गई है।

* अपनी इसी कल्पना के कारण नाना प्रकार के शूल-बीमारियों द्वारा वे लोग आप के आहार-बिहार को भी यथाशक्ति अपने चित्तानुकूल रखते हैं।

दल का समूल संहार करना है। बिना इस समस्या के हल हुए सृष्टि में कोई भी नया और बड़ा सुधार नहीं हो सकता। चूंकि आप के नेताओं (कल्कि-गाँधी आदि) के तप और लक्ष्य भी इसी कारण रुके हुए हैं; अतः आप लोग सर्व प्रकार से इस 'धर्म-संग्राम' की सहायता करें।

ॐ धर्म-तत्व के ज्ञान से रहित भोले योगियों की महा भूल और इस शरीर के मुख्य समाधि-विरोधियों के नाम :—कुछ नये योगाभ्यासी लोग इन रक्त-लोभी लोगों द्वारा शूल दे कर इस धमकी की झूठी बातों या संस्कारों द्वारा योगाभ्यास से हटा दिये गये हैं कि दुर्गा योग करने से तुम पर अप्रसन्न हो कर तुम्हें कष्ट दे रही हैं। यहाँ यह बात बहुत विचारणीय है कि जगत-जननी, आदि शक्ति यानी ब्रह्म-शक्ति (गुरू की शक्ति) दुर्गा ब्रह्म-पूजा रूपी योगाभ्यास से अप्रसन्न कैसे होगी ? जब कि वह परमेश्वर (ब्रह्म या अविनाशी गुरू) की दासी है, स्वामी के भक्त को कष्ट क्यों देगी ? यहाँ इस धोखा देने वाली गुप्त चाल का भेद मुझ से सुनिये—यदि दुर्गा स्वामी की पूजा को रोकती है तो एक दिन स्वामी उसका दंड अवश्य करेंगे; मगर सच्ची बात यह है कि सूक्ष्म, अप्रत्यक्ष लोकों के निवासी शक्ति लोग उधर तो कभी आप को थोड़ी सहायता-शिक्षा कर के समाधि या अन्य कामों में लीन होती हैं और इधर आन्तर जगतों के पेटू, रक्त-लोभी चोर लोग आप के शरीर में घुस कर, चुपके से आप के मन की सब बात जान कर, आप के ईष्ट-शक्ति की धोखा व भोगों से बचाने वाली, समाधि के पक्ष की सर्व शिक्षाओं से विरुद्ध अपने स्वार्थ वाली शिक्षा झूठ-मूठ शक्ति का नाम ले कर, शूल-बीमारी का भय दे कर आप के मन को पढ़ा देते हैं। आप जानते हैं कि शक्ति की आज्ञा है यानी ईष्ट बोल रहे हैं और उधर परदे में से आप के रक्त-वीर्य के चोर-चोरनी बोल रहे हैं। इसी प्रकार का धोखा प्रायः कर के देह-धारी गुरू के (या जीवित गुरू के) निकट न रहने वाले शिष्यों को वर्त्तमान काल में रात-दिन हो रहा है। इस शरीर-प्रवेश रूप चोरी का भेद बहुत गहन एवं लम्बा है, तर्क से समझ में नहीं आ सकता ; अतः सदा प्रत्यक्ष, एकान्त-सेवी, समाधि-निष्ठ गुरू की शरण होइये। अन्यथा ये चोर लोग आप के जीवन को भयंकर आपत्ति में डाल देंगे। इसी ऊपरी भेद के अनुसार इस शरीर के मुख्य समाधि-द्रोही का नाम "दुर्गा" देवी है, जो शरीर-प्रवेशक, देव योनि के असुरों की रानी है। बलिया शहर के सामने सूक्ष्माकाश के भुवर्लोक में, कुलेशर शहर में उसकी राजधानी है। उसका मंत्री—"कामरतन", दूत—"विकटा", "भयंकरा" आदि हैं, जो उसकी सेना के

प्रधान मायावी राक्षस हैं। ये उपरोक्त नाम वाले राक्षस लोग ही इस शरीर के मुख्य प्राण-हत्यारे शत्रु हैं।

ॐ युद्ध में बर्तमान घटना :—चूंकि दुष्टों के शूल-उत्पात् कारण महात्मा के अकेले कष्ट सहते हुए लड़ कर, विघ्न हटाय शान्ति प्राप्त करने और दूसरों का कल्याण करने वास्ते ५०००००००००००० (पचास सौ करोड़) राक्षसों के पराजित करने में सहस्रों वर्ष लगेंगे ; क्योंकि राक्षस लोग आप के सभी धार्मिक मर्यादों (कानूनों) या महिमा को काटने की महा-महा आसुरी युक्ति-शक्ति रखते हैं; सिवाय सर्व शक्तिमान्, सर्वज्ञ, परम ब्रह्म, परमात्मा, सर्वाधिष्ठान, अविनाशी पुरुष के आप मृत्युलोक-वासियों के पूर्ण ब्रह्म कहलाने वाले अवतार या ईश्वर लोग भी उन्हें बिजय नहीं कर सकते। महा सिंह, अवतार-केशरी, भगवान बुद्ध तक धोखे में आ गये, फिर रजोगुणी अवतारों की बात ही क्या की जाय ? इधर सृष्टि में महा अशान्ति और हाय-हाय मची हुई है। निर्दोष जनता का भी जीवन महा संकटापन्न हो रहा है। इस कारण महात्मा अब अकेले का, अति देर का, कष्टकारी युद्ध-मार्ग छोड़ कर, युक्ति द्वारा शीघ्र दुष्ट-संहार करने वास्ते परमेश्वर द्वारा इसी युद्ध में अविनाशी बनाई हुई पिंडारी की तपोभूमि या युद्ध-भूमि त्याग कर, काशी में आय सच्चे योगाभ्यासी, परोपकारी महात्मा और सच्चे धर्म-सेवक सम्पत्तिवानों की सहायता चाह रहे हैं। अतः निवेदन है कि, 'पिंडारी' की गुफा पर जा कर शक्ति को प्रकट करने की डिग्री-प्राप्ति वास्ते असुरों के महान् असहनीय अत्याचारों को सहते हुए भजन करने वाले महात्माओं के लिये दूध-घी आदि युक्त भोजन-वस्त्र, उनके सेवकों के बेतन और रहने के ब्यय का भार आप सम्पत्तिवान लोग उठावें। जब तक शक्ति प्रकट नहीं होती आप लोग यह कष्ट सहें ; जब शक्ति प्रकट होय कर, दुष्ट-नाश कर समाधि-मार्ग खोल देती है तो महात्माओं की सेवा में दी हुई अपनी सम्पत्ति व सहायता का पूरा-पूरा पुरस्कार आप लोग लूटें। आप लोग (सम्पत्तिवान लोग) अकेले या कई आदमी एक साथ गुफा पर चल कर, युद्ध-भूमि देख कर और युद्ध का पूरा-पूरा वर्णन महात्मा कृत (लिखित) "आन्तर जगत-रहस्योद्घाटन" नाम की ५ भाग की पुस्तिका से पढ़ कर इस पवित्र धर्म-संग्राम में हाँथ बटावें। बिना इस युद्ध के अन्त हुए न तो आप को शान्ति है; न आप के देश-जनता, बाल-बच्चों को। बल्कि कष्ट बढ़ता ही जावेगा ; क्योंकि आप के शरीर को ही अपना घर मानने वाले दुष्ट लोग बढ़ते ही जावेंगे। उनका अत्याचार आप के जीवन पर ग्रहण लगाता जावेगा—यह भविष्य की रेखा है।

ॐ आपत्ति :—सूक्ष्म लोक-वासी इन उपरोक्त चोरों की संख्या आप के भू-लोक की जनसंख्या से पाँच गुनी के लगभग है। उन चोरों ने इस धर्म-रक्षक युद्ध के विरोध करने वास्ते अपने लोक-वासियों में इस बात का ढिंढोरा पीट दिया है कि जहाँ कहीं भी इस महात्मा या युद्ध का काम होता देखो वहीं गुप्त संस्कारों द्वारा सहायकों की बुद्धि घुमा कर काम में विघ्न और विरोध कराओ। उनके (असुरों के) दूत लोग सबके अंतः करणों में (मनों पर) इस बात की खोज कर रहे हैं कि कहाँ कौन युद्ध-तैयारी हो रही है। हमारे शरीर में उनका मुख्य अड्डा (पहरा या मोर्चा) है। निश्चित् रूप से कम से कम ५० या १०० की संख्या में रात-दिन देव-राक्षस लोग शरीर के अन्दर बैठे हुए निरन्तर चींख-चिल्लाहट मचाये रहते हैं। यहीं से सब भेद जान कर, सभी जगह दूत दौड़ा-दौड़ा कर काम रोक रहे हैं। इस कारण अखबार, प्रेस, धनी तथा भजन में सेवा-सहायता करने वाले सभी लोग युद्ध में शीघ्रता से पूर्ण सहानुभूति दिखाने से बंचित हो रहे हैं। परन्तु काम धीरे-धीरे बढ़ता ही जा रहा है, जिसका फल धर्म की जय अटल है। "यतो धर्मस्ततो जयति।"

ॐ आप के प्राचीन और अर्वाचीन सभी अवतार लोग उपरोक्त शरीर-प्रवेशक चोरों के अधिकार में :—(१) अमरत्व के लक्ष्य साथ पूर्व जन्म में तप पूर्ण कर दूसरे जन्म में "कृष्ण" नाम से, शरीर से अमर हो कर जीवित रहने की इच्छा वाले (जैसा परशुराम आदि अवतारिक पुरुष लोग अमर हैं) भगवान कृष्ण हृदय में गुप्त रूप से घुसे हुए इन्हीं चोरों द्वारा बार-बार मन में गुप्त रूप से दिये गये भोग❀ के संस्कारों द्वारा समाधि-भ्रष्ट कर, द्वारिका में अति विषयी बनाय, पराधीन (देवों के अधीन) कर शरीर छुड़ाय लोक से हटाये† गये। वे महामाया नामी कपटी शक्ति पर विश्वास कर चौपट हुए; जैसा कि हमसे भी इस धूर्ता, बनावटी शक्ति (महामाया) से वार्ता हुई, जो कृष्ण की तरह अपार-अनन्त रंडी-भोग की लालच देती थी। यह (भगवान कृष्ण का) रहस्य ब्रह्म-शक्ति द्वारा बताया गया और धोखा से बचने वास्ते चेतावनी भी दी गई।

❀ ॐ नोट :—देव योनि वालों का भगवान कृष्ण या अन्य अवतारों को भोग-भ्रष्ट करने का कारण यह है कि वे अवतारों को शीघ्र लोक से हटाना चाहते और उनके मन पर पूर्ण अधिकार रखना चाहते हैं; यह दोनों बातें तभी होती हैं जब अवतार गण भोग-ऐश्वर्य-धारी होते हैं। भोगी होने पर मन के चंचल होने से देव लोग मन में मोक्ष या मृत्यु के संस्कार आसानी से जमा कर उन्हें (अवतारों को) देश से उनके शरीर-त्याग करा कर शीघ्र लुप्त कर देते हैं; जैसा भगवान राम और कृष्ण को किये। जो अवतार भोगी नहीं होते उन्हें भ्रमण करने की बुद्धि गुप्त रूप से दे कर देश से हटा देते हैं; जैसा श्री चन्द्रादि को।

† ॐ नोट :—अवतारों या सिद्ध योगियों को देश में रहने देने से देवों को यहाँ के लोगों से पूजा-प्राप्ति में बाधा पहुँचती है; अतः देव लोग अपने रक्षा व पूजा-प्राप्ति के लाभ वास्ते अवतारों-योगियों को देश से हटाते रहते हैं।

(२) सिद्ध शरीर रखने की इच्छा वाले योगीश्वर नानक जी दुर्गा की शरण थे, जिससे उनका भी अमरत्व नष्ट हो गया। (३) सिद्धेश्वर श्री चन्द जी चतुर निकले। ये भोगी नहीं हुए; पर दुर्गा कहती है कि वे भी हमारी शरणागत थे। याद रखिये ऊपर के जगतों का एक महा नीच भी अपने को, आप के लोक-वासियों के यहाँ ईश्वर या दुर्गा के नाम से ही प्रकट करता है एवं आप के अवतारों को अपना गुलाम कहता है यानी अति तुच्छ दृष्टि से देखता है। (४) भगवान् बुद्ध, अवतार-केशरी, इन चोरों को बिजय तो कर गये, पर शंकराचार्य जी के विशुद्ध सनातन धर्म के सत्य अनुभवों को (सिद्धान्तों को) इन चोरों कारण ठीक-ठीक नहीं पा सके। इन पर गुप्त रूप से देवों का अधिकार रहा; ऐसा अनुमान है। इसी प्रकार अन्यान्य बहुतेरे भोले योगी (अनजान होने के कारण) इन मिथ्या ईष्ट-नाम-धारी चोरों की शरण[†] में! बर्त्तमान काल में भगवान् कल्कि वास्ते धोखा देने की तैयारी हो ही रही थी तथा महात्मा गाँधी का तप (अनशन) ये चोर लोग देख ही रहे थे, तब तक बिशुद्ध शांकर बेदान्त की प्रचंड ज्वाला के सामने इन चोरों की पोल ही खुल गई; धूर्तता का भंडा फूट गया। चोर गिरफ्तार हैं; शूली-दंड सुनिश्चित् हो चुका है; इसी न्याय के प्रयोग करने वास्ते युद्ध हो रहा है। इन राक्षसों के प्रथम के आंशिक विजेता आकाश में स्थित भगवान सूर्य और भगवान बुद्ध इस शरीर को विदित हैं। ये चोर लोग ध्यान में बिष्णु-शंकर इत्यादि सबका बनावटी रूप एवं सर्व दृश्य दिखा सकते हैं। सर्व ईष्टों की तरफ से स्वप्न व नभ-बानी भी दिखा-सुना सकते हैं। समाधि में भी धोखा कर अनुभव-शिक्षा गड़बड़ाय, सर्व

[†] ॐ नोट :—अवतारों पर चोरों (देवों) का यह अधिकार कभी तो (जब अवतार कम शक्तिवान् होते हैं) अवतारों से स्वीकार करा कर प्रत्यक्ष रूप से होता है; मगर जब अवतार बहुत स्वतन्त्र-शक्तिवान् होते हैं, तो ऊर्ध्व लोक-वासी लोग परमेश्वर के बदले में स्वयं गुप्त रूप से बनावटी तप-पूर्ति का चिह्न दिखा कर चुपके से शरीर में बैठे हुए निराकार परमेश्वर की तरफ से मिथ्या चालों द्वारा अवतारों पर आज्ञा चलाते रहते हैं। पर अवतार लोग इस भेद को जानते ही नहीं या चोरों को परमेश्वरीय कर्मचारी समझते हैं। कभी-कभी तप-पूर्ति बाद निरन्तर प्रबल संस्कार-प्रेरणा द्वारा अवतारों की बुद्धि को अपने अधीन रखते हैं। अनुमानतः भगवान बुद्ध का तप किसी दूसरे ने पूरा किया और पुनः बुद्धि में सदा ही गुप्त-शरीर-प्रवेशक देव योनि वालों का संस्कारी अधिकार रहा। तभी बुद्ध देव के सिद्धान्त सनातन धर्म से विभिन्न हुए। इसी प्रकार देवों की संस्कारी चालें बड़ी विस्तृत व गहन हैं, जो धन व समय की कमी कारण यहाँ प्रकट नहीं की जा सकतीं। अवतारों यानी लोक के धर्मोपदेशकों की तपस्या में देवों की साझदारी होने पर सनातन धर्म का बिशुद्ध रूप अवश्य गड़बड़ हो जावेगा; तब योग-पथ भी अवश्य केवल गुरु-भक्ति के बदले देव-देवी, राकस-भोकस की भक्ति से जकड़ जावेगा। बस, भूत व काली का गुलाम योगी योग-शक्ति-हीन हो कर, स्वतंत्र ईश्वर होने के बदले अवश्य अमीर व सम्राटों की प्रजा बन जावेगा। अतः दूर भगाओ देश से इन पारलौकिक ईष्टों को !!! याद रखो बनावटी ईष्टों के हटाव से सच्ची योग-शक्ति की प्राप्ति, योग-शक्ति की प्राप्ति से भौतिक शक्ति तुम्हारी मुट्ठी में, फिर सारे विश्व पर तुम्हारा साम्राज्य अवश्य स्थापित होगा।

प्रकार से स्वार्थ (पूजा व रक्त) वास्ते आप लोगों का परमेश्वरीय बिश्वास और धर्म-मर्यादा बिनष्ट कर रहे हैं। जब महा पुरुषार्थी भगवान बुद्ध परमेश्वरीय वाणी पहचानने में धोखा खा गये; तब यह शरीर कदापि सच्ची, सर्वथा निःसंशय वाणी पहचाने बिना समाधि-अनुसंधान छोड़ नहीं सकता।

ॐ उपसंहार :--इस लेख के लेखक महात्मा जी स्वयं हैं। शीघ्रता से धर्मी जनता को युद्ध-रहस्य समझा कर शीघ्रता-पूर्वक युद्ध-तैयारी प्राप्त कर लेना ही उनके काशी-निवास का एक मात्र प्रयोजन है। बिघ्न कारण (२४ घंटे की गाली और व्यभिचार के नाटक की बृष्टि से) जाप, ध्यान, पाठ, सबसे रहित हो कर, शूल कारण चित्त की सावधानी से भी रहित हो कर बस एक आधार 'ॐ' के ऊँचे जाप के आश्रय आप से दुष्ट-कथा वर्णन करने को समर्थ हो रहे हैं। हृदय पर पहरा देती हुई दुष्ट-सेना भीतर से यानी शरीर के अन्दर से ललकारा दे रही है कि, "जब तक तुम्हारे (महात्मा के) शरीर के भीतर कोई सूक्ष्म शरीर से योग-बल द्वारा दुष्ट-सेना के पास नहीं आयेगा, हम लोग (दुष्ट लोग) शरीर से बाहर नहीं निकलेंगे और मृतक हो कर ही समाधि करने देंगे!" परमेश्वर प्रतिज्ञा करते हैं कि, "पैर ऊपर सिर नीचा कर के उलट कर जिन्दी शूली कर के छोड़ेंगे।" जो लोग इस धर्म-संग्राम में किसी प्रकार भी सम्मिलित होंगे, वे अवश्य ही धन, धर्म, सुयश, परमेश्वर-दर्शन के भागी होंगे।

ॐ शास्त्र प्रतिज्ञा :--(इस श्लोक में भाव की प्रधानता है; व्याकरण की नहीं।) "चलंति तारे, विचरंति मन्दिरम्। चलंति मेरू-रवि-चन्द्र-मंडलम्॥
कदापि काले पृथ्वी चलंति। न चलंति धर्मः सत्पुरुष-वाक्यम्॥"

ॐ पता :—योगेश्वर महात्मा श्री विज्ञान स्वरूप जी, मुकाम—पिंडारी (योग-भूमि), डाक—हल्दी, जिला—बलिया (यू० पी०)।

ॐ वर्त्तमान पता :—धर्म-संग्राम-कार्यालय, युनिवरसिटी रोड, अस्सी-संगम, काशी। सन् १९४४ ईस्वी (अक्टूबर)।

ॐ एक शिक्षा :—घोर कलिकाल एवं राजनैतिक गड़बड़ी के कारण, इन उपरोक्त रक्त-लोभी डाकुओं द्वारा योग-शक्ति से रहित हुए विरक्त साधु-महात्माओं को अधिकांश देश-बासी लोग आजकल बहुत ही घृणा की दृष्टि से देख रहे हैं। कितने ही लोग बड़ी ढिठाई के साथ यहाँ तक कहते हुए सुने गये हैं कि, "पेट भरने वास्ते कपड़े रंगे हुए भारत के ५६००० इन भिक्षुओं ने भारत को और भी मिट्टी में मिला डाला।" पर आप लोग गाँठ बाँध लीजिये कि वह समय अब आप के सामने विद्यमान है, जो डंके की चोट के साथ यह बात कह रहा है कि, "अरे! यदि

यह एक कोपीन (लंगोटी) धारण करने वाले भिक्षुक गण भारत में विद्यमान न होते तो आज केवल भारत ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण हवाई शक्ति संयुक्त वैदेशिक लोग भी इन पाँच खरब देव-राक्षसों के सामने बकरे के समान मृत्यु के मुख में होते !" अतः आप गृहस्थाश्रमी लोग आंतरिक शक्तियों से लड़ कर देश की रक्षा करने वाले इन धार्मिक रंगरूटों की शास्त्रानुकूल सहायता-सत्कार करिये । याद रखिये आप के पूर्व के अवतार (भगवान) लोग भी इन्हीं भिक्षुओं में से निकले थे ।

ॐ साधु-महात्माओं से अनुरोध :—विरक्त महात्मा-मंडली से यह निवेदन है कि, यद्यपि गृह-कुटुम्ब के त्याग करते ही आप लोग उस योग-पथ पर चल पड़े जिसका अन्तिम लक्ष्य सर्वस्व का त्याग है ; पर इतने मात्र से ही आप लोगों का निजी गृह-कुटुम्ब त्यागना और धर्म के नाम पर जीवन-निर्वाह करना रूप कार्य पूर्ण निर्दोष और प्रशंसनीय नहीं हो सकता । अतः आप लोग चौबीस घंटे के अपने दुर्लभ समय को कम से कम अति सरल ईष्ट के नाम-जप में ही लगाने का यत्न करें । कहने का तात्पर्य यह कि आत्मोन्नति से (ईष्ट-ध्यान से) रोक कर आप सन्मार्गी लोगों को अपने स्वार्थ-लाभ करने योग्य (रक्त-वीर्य-शोषण योग्य) बनाये रखने की दुष्टों की भीतरी गुप्त चाल अर्थात् भजन छुड़ा कर खाने, सोने, बहु बोलने एवं देशाटन में लगाये रखने के धोखे से अपनी रक्षा करिये । वे महात्मा लोग जो योगाभ्यास के मार्ग से दुष्टों द्वारा किसी युक्ति से हटा दिये गये हैं, वे यह दुष्ट-रहस्य जान कर पुनः अपने मार्ग पर आरूढ़ होवें । जो लोग योगारोहण कर रहे हैं, वे यह दुष्ट-भेद जान कर कुशाग्र बुद्धि से इन दुष्टों की चालें असफल करें ।

ॐ कुछ मुख्य बातें :—(१) देव और देवता—आकाश-वासी सूक्ष्म सृष्टि 'देव' या 'देव-योनि' के नाम से कही जाती है; चाहे वह पापी हो, चाहे धर्मात्मा । देव-योनि या देव-लोक में जो लोग दैवी सम्पदा, ज्ञान, धर्म से युक्त हैं, उन्हें देवता कहते हैं । देव-योनि पूजनीय नहीं. देवता पूजनीय हैं ।

(२) योगेश्वर-योगीश्वर—जो सभी योगों को सांगोपांग साधता है सो योगेश्वर और जो पूर्ण रूप से केवल एक योग साधता है सो योगीश्वर कहलाता है ।

(३) सृष्टि-रहस्य यानी रचना-भेद 'राधा स्वामी सम्प्रदाय' में विशेष वर्णित है ।

(४) सनातन धर्मानुयायी 'जड़ भरत' और 'प्रह्लाद' की शूली से रक्षा हो गई ; पर 'ईसा मसीह' आदि कई अन्य धर्मावलम्बियों की नहीं हुई ; अतः वे धर्म सनातन पुरुष से पूर्ण स्वीकृत नहीं हैं । बल्कि शरीर-प्रवेशक चोरों द्वारा संचालित हैं । ऐसा दृढ़ अनुमान है ।

(५) मेरी लिखी हुई "आन्तर जगत-रहस्योद्घाटन" नामक पुस्तक से शरीर-प्रवेशकों का बहुत बृहत् भेद ज्ञात हो सकता है ॥ इति ॥

॥ ॐ द्वितीय भाग प्रारंभः ॥

ॐ इन राक्षसों के सब को न दिखाई देने का कारणः—(१) इन राक्षसों के भू-लोक के सभी लोगों को दिखाई न देने का कारण सर्व प्रथम यह है कि, ये राक्षस गण रावण-कंस आदि राक्षसों के समान भू-लोक या मनुष्य योनि के नहीं हैं; ये देव* योनि के राक्षस देव लोक के हैं। देव योनि यानी देव जाति या देव लोक-निवासी सृष्टि भू-लोक की सृष्टि से विचित्र रंग और भिन्न प्रकार की है। देव लोक के व्यक्ति (मनुष्य) की लम्बाई (क़द) भू-लोक के छोटे चावल के बराबर और देव-लोकों की सूक्ष्मता के अनुसार क्रमशः चावल से भी सूक्ष्मतर है। परन्तु हमारे लोक के चावल भर में ही राक्षस गण अपने लोक में अपने हाथ से साढ़े तीन हाथ के हैं और मनुष्यों के समान ही उनकी देह है। जिस प्रकार अपनी दृष्टि के सामने अपने नेत्र-बिकार से उत्पन्न हुए तरवरे या तिरमिरी (नेत्र के सामने, आकाश में नेत्र-बिकार होने पर नाचने वाले गोलाकार रूप या छाया) अपने आप ही को दिखाई देती है, उसी प्रकार ये राक्षस-देव जिसकी दृष्टि की सीमा में आते हैं और जिससे लड़ते हैं, उसी को दिखाई देते हैं; दूसरा नहीं देख सकता। जिस प्रकार अपने पेट के अन्दर बोलने वाले कीड़े (जोंकी या केंचुआ) की बोली पेट वाला ही सुन सकता है; दूसरा नहीं; उसी प्रकार इनकी भी बोली जिसके पेट में या पास में ये (देव-राक्षस) बोलते हैं वही सुन सकता है। जिस प्रकार तसवीर (फोटो) का हाथी छोटे पैमाने में ही बहुत बड़ा होता है, ठीक उसी प्रकार चावल भर में ही देव-राक्षस गण अपने लोक में पूर्ण डील-डौल के हैं। (२) द्वितीय कारण इन देव-राक्षसों के सबके प्रत्यक्ष न होने का यह है कि, चूँकि उनका काम चोरी का है; रक्त-वीर्य पीना, पाप-बुद्धि देना या शरीर में घुसना आदि नीच और शरीर-हानिकारक कार्य वे आपको बता कर नहीं कर सकते; अतः यथाशक्ति सबसे छिप कर गमनागमन, बोल-चाल करते हैं। विघ्न या युद्ध करने वास्ते भी सबसे अन्तिम समय में प्रत्यक्ष होते हैं; यानी सर्वोपरि, अति उग्र समाधि के पुरुषार्थ-प्रयत्न पर। साधारण धर्म-मार्गी को छोटे २ गुप्त विघ्नों द्वारा ही अधिकार में रखते हैं। ये ही कारण हैं कि जिससे आप लोगों के शरीरों में रात-दिन देव-राक्षसों द्वारा महा २ देह और परमार्थ-नाशक कार्य होते हुये भी आप लोग उन्हें देख नहीं रहे हैं।

ॐ दुष्टों के, सभी के परमेश्वरीय बिश्वास या इष्ट-बिश्वास में बिश्वास-घात करनेके मार्गः— सर्व प्रथम यह जान लीजिये कि अप्रत्यक्ष या परलोक-वासी ईष्ट लोग छः युक्तियों (मार्गों) से अपने भक्तों को सहायता-शिक्षा देते हैं; उन्हीं युक्तियों में ये स्वार्थी, शरीर-प्रवेशक देव-राक्षस लोग आज-कल

* देव योनि के होने से इन राक्षसों को 'देव-राक्षस' कहते हैं।

लगभग सभी के यहां धोखा कर रहे हैं। कोई महात्मा या दृढ़ बिश्वासी व्यक्ति यदि यह कहे कि हमारे यहाँ या अमुक देवालय में देव-राक्षस नहीं आ सकते, तो यह मिथ्या है; क्योंकि ये नर-राक्षस नहीं, देव-राक्षस हैं। अतः देव होने के कारण सर्बत्र प्रवेश कर जाते हैं। धोखा के और ईष्ट-सहायता के मार्ग—१. स्वप्न की युक्ति में ईष्ट की तरफ से बनावटी स्वप्न, २. नभ-बानी की युक्ति में बनावटी नभ-बाणी, ३. दूसरे द्वारा प्रेरित कराने में बनावटी राक्षस-कृत प्रेरणा। ४. अंग-फड़कन की युक्ति में हाथों द्वारा नसें खींच कर अङ्ग फड़काना। ५. ध्यान में बार्ता व आकार दर्शाने में भी बनावटी कार्य, ६ बुद्धि-प्रेरणा की युक्ति में निरन्तर २४ घण्टे, रात-दिन टोली बनाकर बनावटी धर्म-विरुद्ध संस्कारी बुद्धि देना—इस प्रकार छहों मार्गों में जालसाजी हो रही है। जैसे २ सृष्टि पुरानी होती जा रही है धर्म-मार्ग विघ्नाछन्न होता जा रहा है।

ॐ ध्यान-काल में आन्तर यानी सूक्ष्म जगतों की रूप दिखाने की युक्तियां:—(१) दिब्य पुरुषों का स्वयं वास्तव में दृष्टि-सीमा में आना, (२) धोखा देने वास्ते चोरों का मनोवाहिनी नाड़ी में घुस कर उक्त महा पुरुषों का रूप आप के मन की भावना वाले आकार से जान कर उसी आकार का, अपने मन द्वारा संकल्पित रूप बना कर आप के मन-प्रवाह में संकल्प द्वारा फेंकना। यह बहुत गुप्त व गहन बिषय प्रत्यक्ष समझाने से ही ज्ञात होगा। इसी के द्वारा ध्यान व समाधि में सूक्ष्म जगतों के राक्षस लोग योगियों को बर्त्तमान काल में अपार धोखा दे रहे हैं। इसी युक्ति से ब्रह्मा-बिष्णु आदि सभी ईष्टों का और लोकों के स्थानों का बनावटी नाम-रूप-शिक्षा ईष्ट की इच्छा बिना राक्षस लोग अपने स्वार्थ-पोषण वास्ते ध्यान में बार२ दिखा कर आप लोगों को आत्मोन्नति या समाधि से विचलित कर रहे हैं। बहुतेरे योग-साधकों को झूठ-मूठ ईश्वर-दर्शन करा कर उन्हें पूर्ण फल पाने से रोक दिया है। (३) कुछ रूप सृष्टि के स्वामी परमेश्वर द्वारा, जब कि ईष्ट शरीर विद्यमान नहीं रहता है, दिखाये जाते हैं। (४) कुछ रूप शरीर-प्रवेशक, सिद्ध देव-मंडली अपनी शक्ति के द्वारा इच्छानुसार दिखाया करती है। इस प्रकार आज-कल, समाधि में रूप-दर्शन की नाना बिधियों के कारण राक्षस लोग बनावट द्वारा आप की समाधि के लाभ और आत्मोन्नति को बिध्वंस करने में अपार उन्नति कर गये हैं। इन राक्षसों के महा बनावट कारण ही कलि में किसी भी मंत्र-तंत्र-जप-योग की सिद्धि नहीं हो हो रही हैं।

ॐ महात्मा के सदा ऊंचे स्वर से प्रणव-जाप करने का कारण—यह शरीर (लेखक) सदा—खाते, मार्ग चलते, सर्ब क्रिया करते, निरन्तर जोर २ से ऊँचे स्वर में 'ॐ' का जप करता रहता है। इसका कारण यह है कि शरीर के भीतर

प्रवेश की हुई दुष्ट-सेना जाप को रोकने वास्ते, मस्तिष्क (दिमाग) या बुद्धि को गड़-बड़ाने वास्ते मन के गमन करने वाली (मनोवाहिनी या सुषुम्ना) नाड़ी में अथवा वाणी के परा, पश्यन्ति, मध्यमा और बैखरी चारों स्थानों पर बहुत बड़ी २ संख्या में हाथ-पैर और चूतड़ टिका २ (अड़का) कर घना जमघट किये रहती है और करती रहती हैं। ताकि वाणी (बृत्ति या आवाज) आने वाली नाड़ी बन्द हो कर जाप रुक जाय। कभी २ बलात् करने वास्ते, नेत्र की ज्योति रोकने वास्ते वे दुष्ट लोग नेत्र की नसों को बन्द करने लगते हैं। मुख में पिशाब, टट्टी, दोनों कानों व कंठ में बैठ कर ध्यान खण्डित करने वास्ते जोर २ से चिल्लाने व गाली बकने लगते हैं; छुरी—बर्छी द्वारा शूल—दर्द भी रह२ कर दिया जाता है। इन ऊपरी बिघ्नों को सहन करने, ध्यान ठीक रखने और जाप के जोर २ के शब्द के झटके व वायु के झोंके द्वारा मनोवाहिनी नाड़ी से दुष्टों को निकालने या नाड़ी के सँकरे (सूक्ष्म) रास्ते से शब्द के पार करने वास्ते महात्मा मानसिक जाप-ध्यान छोड़ कर सदा जोर २ से प्रणव-जाप करते रहते हैं। दुष्टों की इसी गुप्त चाल या युद्ध-रहस्य को न जानने कारण अज्ञानी महात्मा या पड़ोसी लोग ऊँचे स्वर के जाप को दूसरों को सुनाने वास्ते ढोंग समझते हैं।

ॐ सर्व योगाभ्यासी या भजनीकों की वृत्ति-लय या निद्रा का प्रधान कारण—इसका भी मुख्य कारण ये ही सूक्ष्म भुवनों के गुप्त, शरीर-प्रवेशक चोर लोग हैं, जो इस भेद को न जानने वाले महात्माओं को उनकी भजन रोकने वास्ते ऊपर वर्णन की हुई मनोवाहिनी नाड़ी में घुस कर, उस नाड़ी को बन्द कर धोखा देते हैं; नेत्र की नस बन्द कर देते हैं, जिससे बृत्ति लय हो जाती है। चित्त-एकाग्रता (ध्यान) की विशेष हानि वास्ते स्वप्न भी दिखाने लगते हैं।

ॐ महात्मा की लड़ाई का अभिप्राय—महात्मा की लड़ाई या अपार कष्ट-सहन केवल अपने ही कल्याण या भजन या समाधि वास्ते नहीं है, बल्कि सारे भू-मंडल, सभी लोकों, सम्पूर्ण ब्रह्मांडों की आत्मोन्नति या समाधि चाहने वाले लोगों वास्ते है। सर्व शक्तिमान परमेश्वर के न्यायालय में (कचहरी में) इस बात की भीषण माँग (रिपोर्ट) है कि, यह गुप्त पर-शरीर-प्रवेश रूप चोरी व चोरों को सबके शरीरों से विनाश यानी बहिष्कार किया जाय। सोचने-विचारने में सबका स्वतंत्र अधिकार रहे। बुद्धि घुमा २ कर धोखे से पाप कराने की चाल का विनाश हो। केवल एक, सर्वव्यापी, सर्वाधिष्ठान, परम अव्यक्त, आदि पुरुष, नारायण, बासुदेव-भगवान परमेश्वर यानी वेदान्त-प्रतिपाद्य ब्रह्म पुरुष अन्तर्यामी या पर-शरीर-प्रवेशक या बुद्धि-प्रेरक रहें; न कि सूक्ष्म भुवनों के नीच, महा पापी चांडाल। परमेश्वर के जप-तप-समाधि के कर्मों में केवल लौकिक और शारीरिक बिघ्न रहें; न कि उक्त गुप्त दुष्टों का।

ॐ दुष्टों पर क्षमा-दया करने की बात स्वप्न में भी मत बिचारिये :—आप के आकाश में विद्यमान भगवान सूर्य देव ने युद्ध में इन दुष्टों को विजय करने उपरान्त दया की राह महा दंड व समूल विनाश के बदले उग्र न्याय घटा कर इन ब्रह्म-हत्यारे महान् अपराधियों को दीर्घ आयु व सुन्दर शरीर दे कर रथ के आगे हाथ जोड़ कर स्तुति व वेद-मंत्र उच्चारण करते हुए चलने वास्ते बाल-खिल्य (बाल-ऋषि) बनाया। भगवान कृष्ण ने विजय होने उपरान्त दया की राह अपने युद्ध कालीन दंड के संकल्पों को बदल कर गोपी और कामिनी बनाया। भगवान बुद्ध ने कुछ भी बड़ा दंड अपने लोक-वासियों के सामने प्रत्यक्ष में उन लड़ैता दुष्टों का नहीं किया। दुष्टों पर इन्हीं सब भविष्यत्-विचार से हीन दया रूप धर्म के प्रयोग करने का कुफल प्राप्त हुआ है कि, बार-बार धर्मोद्धारकों के महान् कष्ट सहने पर भी आगामी धर्मोद्धारकों पर विपत्ति के बादल पहले से भी अधिक, उत्तरोत्तर उग्र रूप में उमड़ते आ रहे हैं। वे बिचारे पर-उपकारी, लोकोद्धार चाहने वाले धर्मोद्धारक लोग महान् से भी महान् कष्ट के गड्ढे में गिरते आ रहे हैं। इतना ही नहीं, बल्कि बार-बार धर्मोद्धार होने पर भी बारम्बार असंख्य, निर्दोष, दुर्बल ब्रह्म-भक्तों की महान् दुर्दशा होती गई है और होती आ रही है। इसमें गुप्त रहस्य यह है कि सूर्य देव आदि पूर्व के पुरुषार्थियों द्वारा महा दंडनीय भजन-विरोधियों को जो थोड़ी या बहुत न्याय के बिरुद्ध शुभ गति प्राप्त हो गई है, इस कारण से सूक्ष्म जगतों के सारे अधोगति में गिरे हुए नीच लोग यह निश्चय धारण कर लिये हैं कि, अवश्य ही स्थूल जगत-वासियों के शरीरों में घुसना और योग-तप में विघ्न करना (परमेश्वर-स्वीकृत) धर्म है। क्यों कि यदि धर्म न होता तो विघ्न करने का फल बाल-खिल्य या गोपी-जीवन रूप महान् पुरस्कार क्यों मिलता? भू-लोक में जो भगवत्-संग महान् पुण्य या तप का फल होता है, सूक्ष्म लोकों में वही भगवत्-प्रसाद जप-तप की या योगी की हत्या से प्राप्त हो! यह कैसा उल्टा न्याय है? इस विपरीत चाल का ही ऐसा भयंकर परिणाम है कि, वेदान्त-ज्ञान-विहीन सूक्ष्म जगतों के उच्च पदाधिकारी देव लोग भी शरीर-प्रवेश और योग-तप भ्रष्ट करने को महा पाप के बदले पुण्य समझने लग गये हैं। उनकी (देवों की) इसी दुर्बुद्धि का यह परिणाम हो रहा है कि, शरीर-प्रवेशक देव-दल परमेश्वर और उनके भक्तों को सदा वास्ते निर्मूलन करना चाह रहा है और इसका फल उसे शूली भोगनी पड़ेगी। महा दुष्ट जो हमारे शरीर में टिके हुए दुर्गा के गणों का प्रधान है, बार-बार इस शरीर को धौंस दिखा रहा है कि, "चलो साले! तुम्हारे जैसे असंख्य योगियों को देखता और चिता पर सुलाता आ रहा हूँ; तुम्हारे

में क्या रखा है ?" यही कह-कह कर कलेजे में घाव करता आ रहा है। उसकी भीतरी मनसा यह है कि जब तक दाव चलेगा तुम्हारी (महात्मा की) हत्या की युक्ति करेंगे; जब हार जावेंगे तो उस समय हार मान कर परमेश्वर की कृपा ढूंढ़ेंगे। उसका विश्वास है कि, अपने ईष्ट दुर्गा माई के बल से वह अवश्य या तो इस शरीर की हत्या कर लेगा या हार जाने पर लोगों के चरणों पर गिर कर परमेश्वर और महात्मा के दंड-संकल्पों को क्षमा करा लेगा। पहले के अपने जैसे महा अपराधियों के ऐसे ही दृष्टान्तों को ले कर वह इस शरीर को कष्ट देने में महा बलवान हो रहा है। इसी अंध-विश्वास का आश्रय ले कर वह अपने दल साथ आज ४ बर्षों से इस शरीर में बलात् घुसा हुआ है और कलेजा-दिमाग-फेफड़ा का खून बहाता आ रहा है। अतः क्षमा-दया के इस उल्टे परिणाम को देख कर इन महा ब्रह्म-राक्षसों के वास्ते जब कि वे शक्ति द्वारा अत्यन्त घनघोर दुर्गति को प्राप्त किये जावेंगे, क्षमा-दया का नाम मत लीजिये। 'रिपु पर दया परम कदराई।'

ॐ **दुष्टों का दंड-निश्चय** :—समाधि की निश्चित् डिग्री पूर्ण होते ही विविध हाँकिनी-डाँकिनियों समेत ब्रह्म-शक्ति प्रकट हो कर युद्ध-समय के परमेश्वर या योगी के दंड-संकल्पानुसार सभी लड़ैता दुष्टों को हमारे जगत का स्थूल शरीर दे कर, हमारे लोक में (भूलोक में) सर्व जनता के सामने उन्हें प्रत्यक्ष कर, पैर ऊपर सिर नीचा कर के, लाल, गरम, लोहे के भाले में छेद कर कई करोड़ वर्षों की महान् शूली आकाश में करेगी। इसके सिवाय अन्य भयानक दंड भी किये जावेंगे। इसकी स्वीकृति परमेश्वर के यहाँ से हो चुकी है। इस महा अवसर पर सभी युद्ध में सेवा-सहायता करने वाले लोग निमंत्रित किये जावेंगे।

ॐ **इस धर्म-संग्राम के सहायकों को इनाम** :—जो धर्मात्मा लोग इस धर्म-युद्ध में शरीर या धन से इस शरीर (महात्मा) की सहायता करेंगे, उन्हें युद्ध की समाप्ति यानी देव-राक्षसों की शूली होने उपरान्त सहायता करने के बदले रुपये-अशर्फी की ढेर, लम्बी आयु, बुड्ढे से नया शरीर, राज्य, जागीर, पुत्र, स्त्री, किसी मृतक प्रिय व्यक्ति को नवीन जीवन-दान, अर्थ-धर्म-काम-मोक्ष, सबकी यथा योग्य प्राप्ति कराई जावेगी। जो युद्ध-सहायक जीवित नहीं रहेंगे, उनकी संतान इनाम पायेगी, जिस प्रकार गवर्नमेंट के युद्ध-सहायकों की संतान पाती है। पर सत्य तो यह है कि अब युद्ध का बहुत थोड़ा भाग शेष है; उस पर भी सत्य यह है कि, सच्चा धर्म-सहायक मरने ही नहीं पायेगा। यदि मर भी गया तो उसकी सत्य या पूर्ण सेवा देख कर उसे पुनः जीवित कर लिया जायेगा। लोक,

देश, धर्म, तीनों की, सौभाग्य इसी संग्राम पर निर्भर है; अतः इस अवसर पर कृपिण होना वास्तविक अभाग्य है। जिसे बिश्वास हो सहायता करे; न बिश्वास हो तमाशा देखे। बिना इस देव-राक्षस-महा संहार व दमन हुए महँगी, कन्ट्रोल, राष्ट्रों की लड़ाई-उत्पात् का अन्त नहीं होवेगा। चूंकि महा तपस्या के फल रूप परमेश्वरीय दरबार से राक्षसों की शूली व युद्ध की महा बिजय की अति सुनिश्चित् स्वीकृति हो चुकी है; अतः चाहे जनता सहायता दे; चाहे न दे; बिजय अवश्य होगी; पर इतनी बात अवश्य है कि सहायता (धन की सहायता) मिलने पर बिजय में शीघ्रता होगी और न मिलने पर अधिक समय लगेगा।

ॐ महात्मा के एकान्त छोड़ कर जनता या बस्ती में भजन करने एवं भेद प्रकट करने का कारण :—ये शरीर-प्रवेशक असुर लोग शरीर में प्रवेश कर के रक्त-बीर्य की चोरी रूप महान पाप एवं नीच कर्म करते हैं। इस कारण ये वास्तव में चोर हैं। ये चोर लोग अपनी सूक्ष्म सृष्टि (छोटा कद व सूक्ष्म रचना), शक्ति-युक्ति से बहुत बली हो कर और संख्या में बहुत होने के कारण एकान्त में निर्भय हो कर हमारे ऊपर अधिकाधिक भीषण आक्रमण करते हैं। अपने भेद और अस्तित्व को हमारे जगत-बासियों से छिपाये रखते हैं। ये लोग प्रायः बर्ण-संकर, ब्यभिचारी, गाँडू, गुंडे, कुल्टे लोग हैं। हमारे लोक-बासियों में इनकी कुचाल एवं अस्तित्व प्रकट होने और भेद खुलने से ये बहुत भय खाते तथा बस्ती में शस्त्र-प्रहार भी एकान्त की अपेक्षा बहुत कम करते हैं। इसलिये ३ बर्ष तक महा कष्टकारी (नीम की पत्ती पी कर, भूखा रह-रह कर) एकान्तिक भजन-युद्ध महा-महा काट, शूल व शस्त्र-प्रहार सहते हुए करने के बाद अब महात्मा जनता में प्रत्यक्ष भजन-युद्ध कर रहे हैं। इससे राक्षस गण महा आक्रमण करने से भी डरते हैं और धर्मात्मा जन-समूह भी भेद जान कर सहायता करने का अवसर पा रहा है।

ॐ बार्ता-रहस्य :—युद्ध-सम्बन्धी आवश्यक बात-चीत के समय भजन या युद्ध में बिघ्न करने वास्ते ये शरीर-प्रवेशक लोग बुद्धि में क्रोध और बिरोध का संस्कार दे कर बात-बात में गड़बड़ी तथा संस्कारों द्वारा ही अपने अस्तित्व, भेद और युद्ध-घटना पर भी अबिश्वास उत्पन्न करते रहते हैं। इनका प्रवेश सबके शरीरों में बेरोक होता है। यहाँ तक कि हमारे लेख व सायन बोर्ड भी इनके दौड़-दौड़ कर शरीरों में घुस कर हृदय में घबराहट के, बिपरीत के संस्कार देने के कारण जनता को पढ़ने कठिन हो रहे हैं। बार-बार बन्द स्थानों व प्रेस आदि में से लेखों, रुपयों व आवश्यक समानों के चुराने और पूर्वोक्त भेद छिपाने की चालों

कारण जनता को यह गहन युद्ध-भेद जानना अति कठिन हो रहा है। बहुत बड़ी संख्या होने के कारण, आप लोगों के मन पर टोलियाँ बना कर बड़े कड़े पहरे के साथ बुद्धि में निरन्तर धर्म-विरुद्ध पाप का संस्कार दिया जा रहा है। युद्ध-स्थल यानी हमारे अंतःकरण पर तो ऐसी पाप-भोग की संस्कार-धारा निरन्तर गिराई जा रही है कि, जिस प्रकार ग्रीष्म में शिव-लिंग पर जल-धारा अखंड गिरती है; जिससे दृष्टि पड़ते ही तुरन्त व्यभिचार-स्मृति होने से किसी नर-नारी को देखना तक मेरे लिये कठिन हो रहा है। इसका पता आप लोगों को दृढ़ समाधि-अभ्यास से लगेगा। यह बात अच्छी तरह स्मरण रखिये कि आप के लोक के प्रत्येक भू-भाग के सामने ऊपर आकाश में, समीप या दूर में सूक्ष्म जगतों की बस्तियाँ पड़ रही हैं। अतः आप के जगत की प्रत्येक बस्ती में इन शरीर-प्रवेशकों की चोरी हो रही है। इतना ही नहीं, बल्कि इस भू-लोक को, अपने शरीर-प्रवेश, रक्त-वीर्य की चोरी एवं पूजा-प्राप्ति की सुविधा वास्ते इन ऊपरी लोक-वासियों ने लौकिक गवर्नमेंटों के समान नाना विभागों में बाँट रखा है। अपने-अपने अधिकृत प्रदेश में शरीर-प्रवेश द्वारा कर और प्राण-दंड इत्यादि राजनैतिक विधान प्रयोग किये जाते हैं। अतः आप के जगत के प्रत्येक शरीर में बालक से ले कर बूढ़े और भंगी से ले कर सिद्ध तक में इनका शरीर-प्रवेश है। यहाँ तक सुनने में आया है कि, मनों की वासनाओं (इच्छाओं), भावनाओं, आत्मोन्नति या धर्मोन्नति, समाधि की देख-भाल वास्ते पहरेदार, पटवारी आदि अफसर लोग नियत हैं और वे ही लोग जहाँ आप लोगों की आत्मोन्नति देखते हैं कि, तुरन्त विघ्न-प्रबन्ध, आक्रमण अपने दूतों द्वारा करते हैं। यह सुन कर आश्चर्य कीजियेगा कि, ऊपरी लोकों में हमारे जगत के किसी बड़े सिद्ध, अवतार, योगी, तपस्वी को भ्रष्ट करने या मार डालने वाले को उसके मालिक (स्वामी) द्वारा पुरस्कार दिया जाता है। हमारे शरीर में अपनी सर्व-नाशक समाधि को विघ्नों द्वारा रोकने के लिये देव-राक्षस लोगों की सेना का मुख्य घेरा है। बल्कि शरीर से बाहर भी आकाश में बहु संख्यक सेना जमा रहती है। हमारे यहाँ तो हमारी समाधि को शरीर में शूल-काट, शस्त्र-प्रहार द्वारा रोका जाता है और आकाश में स्थित सेना हमारे योगाभ्यास के "युक्त चेष्टस्य कर्म-सु" के सिद्धान्त का अनुकरण कर हमारे लोक में दौड़-दौड़ कर युक्त चेष्टा (अपनी विजय वास्ते आवश्यक कर्म) करती है; अर्थात् जहाँ जहाँ जिन-जिन शहरों, स्थानों में हमारी समाधि या युद्ध के सहायक कर्म होने को होते हैं, वहां-वहां बड़े-बड़े दल में राक्षस लोग जा-जा कर, बुद्धि प्रेर कर और कष्ट दे-दे कर सहायक कामों को रोकते हैं। सहायकों के शरीरों में रात-दिन का पहरा बैठाया जाता है। जिस समय यह शरीर किसी भी

व्यक्ति से बात करना चाहता है, तुरन्त हमारे शरीर में प्रविष्ट दुष्ट-सेना के दुष्ट लोग हमारे मन की सभी बातें जान कर, दौड़ कर, उक्त हमारे निकटस्थ व्यक्ति के शरीर में घुस कर उसकी बुद्धि में हमारे विरुद्ध हमें पागल होने, ढोंगी होने और हमारे ऊपर उसे क्रोध करने का संस्कार देने लगते हैं। यदि इससे भी वह व्यक्ति हमसे बिरुद्ध नहीं होता तो युद्ध व राक्षसों की बात न सुनने देने वास्ते, ताकि भेद खुलने न पावे, किसी घबराहट के काम का बहाना लगा कर उसे हमारे पास से हटा देते हैं। कभी-कभी यह संस्कार दे देते हैं कि, जब बूढ़े महात्माओं को, प्राचीन ऋषियों-मुनियों को इस बात का पता नहीं, तो इस अल्प बर्ष के महात्मा को इस बात का पता कैसे हो सकता है? मगर यह भेद आप हमसे सुनिये, कि बूढ़े-जवान या थोड़ी-बहुत आयु का भजन-मार्ग में कुछ भी विशेष मूल्य नहीं है। मूल्य है भजन की तेजी, परिश्रम, तप या त्याग और ज्ञान का। इसके साथ ही परमात्म देव के अवसर अनुसार कृपा-प्रदान करने का भी प्रत्येक योगी के जीवन के साथ महान् घनीष्ट सम्बन्ध है। उनकी कृपा-दृष्टि का आकर्षण योगी अपनी अनन्य प्रीति व पुरुषार्थ से कर सकता है। अतः कोई योगी अपने समाधि-मार्ग में आहार-निद्रा को बिजय कर मृत्यु और बुढ़ापा को जीतने को उद्यत हुआ जब सफल-मनोरथ होने लगता है और जो अपने देश-लोक, जीव मात्र का कल्याण चाहता है एवं सच्चा और शक्ति या देव की गुलामी रहित धर्म-प्रचार यानी धर्मोद्धार चाहता है; उसी पर, उसी समय इन दुष्टों का इस शरीर जैसा विशेष भीषण व प्रत्यक्ष आक्रमण होता है; न कि बूढ़े, जमात चलाने वाले और बड़े-बड़े ब्याख्यान देने वाले महात्माओं और योगियों पर। इस शरीर ने भी जब अहार-निद्रा जीत कर काल को सीमा को पार करना चाहा है तथा दुष्टों के प्रत्यक्ष होने पर भी जब इनकी किसी भी धमकी-प्रलोभन में न आकर अनन्त जीव-कल्याण-भावना के साथ सीधी, स्वतंत्र समाधि साधना चाहा है, तब ये दुष्ट लोग अपनी सभी चालों को निष्फल जान कर, विवश होकर, पूर्ण प्रत्यक्ष होकर, सूर्पणखा की भाँति अपनी पूर्ण दुष्टता प्रकट करते हुए, प्राण लेने वास्ते तुल कर भीषण आक्रमण किये हैं। इन लोगों की युद्ध-नीति साधारण लोगों की समझ वास्ते बड़ी ही विचित्र है। इन लोगों के महान् शत्रु योगी लोग जब तक कम शक्ति वाले होते हैं, तब तक ये लोग भी सब भेद जानते हुए एवं युक्ति-शक्ति रखते हुए भी पहले कम शक्ति लगाते और छोटा विघ्न करते हैं और जैसे-जैसे योगी क्रमशः बलवान होता जाता है, ये लोग विघ्न को भी बलवान बनाते जाते हैं यानी क्रमशः विघ्न-शक्ति बढ़ाते हैं; एकाएक टूट नहीं पड़ते। जब देखते हैं कि अब किसी भी तरह योगी हमारी गुप्त

वालों के अधिकार में नहीं आयेगा और शरीर-प्रवेश में रुकावट हो ही जावेगी, तब साम-दाम-भय-दंड-विभेद दिखा कर अन्त में मारने-मरने को तैयार हो जाते हैं।

ॐ युद्ध सम्बन्धी विशेष घटना:—इस शरीर (महात्मा) की वास्तविक तपोभूमि हिमालय में 'भूतनाथ' की गुफा, मुख्य युद्ध-भूमि—जन्म-भूमि 'पिंडारी' ग्राम की गुफा, युद्ध-सहायक भूमि काशी है। यह धर्म-संग्राम उत्तरा खंड में, ऋषीकेश और 'लक्ष्मणझूला' के बीच, बद्रीनाथ के मार्ग में स्थित 'स्वर्गाश्रम' के भूतनाथ की गुफा से प्रारम्भ हुआ है। यह गुफा हिमालय पर्वत के निर्जन, घने जंगल में प्राचीन काल के तपस्वियों द्वारा पहाड़ खोद कर बनाई गई है। निर्द्वन्द्व विरक्ति और तपस्या के आचार्य दिगम्बर, सन्यासी, महात्मा 'नागा जी' के द्वारा, इस शरीर के पिता के इस शरीर को उक्त महात्मा को तप वास्ते अर्पण करने पश्चात्, यह शरीर (लेखक) इसी गुफा में पहुँचाया गया था। श्रीमान् 'नागा जी' के द्वारा सदुपदेश पा कर अपनी महान् तपस्या को सर्व प्रथम यहीं आरम्भ किया था। ज्ञान योग की सिद्धि (आत्म-दर्शन), आत्मदेव के ज्ञान योग सम्बन्धी "अहं ब्रह्मास्मि" आदि महा वाक्यों के उपदेश और ज्ञान योग की प्राप्ति का सार्टीफिकेट यहीं प्राप्त हुए। श्रोत्रिय, ब्रह्म-निष्ठ, महा विरक्त, ज्ञान योग के आचार्य, सन्यासी, महात्मा 'अवधूत जी' के शुभ दर्शन आत्मदेव के द्वारा इसी गुफा में हुए। सर्व प्रथम राक्षसों का प्राकट्य भी यहीं हुआ। अतः मुख्य तपोभूमि यही गुफा है। इन उपरोक्त ज्ञान योग व तपस्या के क्रमशः अवधूत जी और नागा जी, दो आचार्यों के अतिरिक्त योग-विद्या के सर्व प्रथम के आचार्य माता जी श्रीमान् महात्मा सुवच्चन दासी जी उदासीन एवं योग-शक्ति या महा समाधि के आचार्य तुलसी कृत रामायण-प्रसिद्ध "लोमश मुनि" को ले कर इस शरीर के चार आचार्य हैं, जो इस शरीर के आध्यात्मिक मार्ग में बहुत ऊँचा स्थान रखते हैं। इस शरीर के सद्गुरू स्वयं परम पुरुष परमात्मा देव हैं। इन्हीं परमगुरू के निरीक्षण में और उपदेशानुसार यह ब्रह्मांड-व्यापी युद्ध चल रहा है। प्रणव का ऊँचा जाप और नीम-पान का तप उन्हीं का उपदेश है। देव-राक्षसों के तीन बार इस शरीर को मार गिराने पर बार-बार पुनः जीवित इन्होंने किया है। बालकपन में ही इनके द्वारा गृह-त्याग और तपस्या का आदेश इस शरीर को प्राप्त हो चुका था। पिंडारी की गुफा पर इन अपने परम सुहृद के द्वारा गुफा समेत इस शरीर को अमरत्व का महा बरदान प्राप्त हो चुका है। श्री सद्गुरू के द्वारा ही युद्ध में इस शरीर के अवश्य ही विजयी होने का पक्का सन्देश प्रकाश-प्राकट्य के साथ सुना दिया गया है। पिंडारी की तपोभूमि की एकान्त अवस्था और एकान्त में दुष्टों के आक्रमण की भयंकरता देख कर काशी को सहायक

तपोभूमि बनाया गया है। माता-पिता के रुकावट डालने के कारण यद्यपि परम पुरुष आत्मदेव की आज्ञा-पालन में बिलम्ब हो गया है, तथापि पिता की आज्ञानुसार प्राप्त हुए एन्ट्रेन्स के विद्याध्ययन ने भी इन गुप्त पर-शरीर-प्रवेशक ब्रह्म-राक्षसों की जड़ निर्मूलन करने में कुछ कम सहायता नहीं किया है। ये दुष्ट लोग एकान्त की तपोभूमियों पर हजार, पाँच सौ यानी बहुत बड़ी-बड़ी संख्या में अपने लोक से सशस्त्र आ कर, बलात् शरीर के भीतर प्रवेश कर कलेजे आदि सूक्ष्मांगों पर एकाएक भीषण व प्राण-घातक आक्रमण कर देते हैं। उनका यह आक्रमण जनता से छिपाये रखने वास्ते प्रायः सोई रात में होता है। मगर काशी की बृहत् जन-संख्या के सामने और जनता के रात-दिन के जागरण के कारण उनका वैसा आक्रमण करने का साहस जाता रहा। स्वर्गाश्रम की गुफा से यह संग्राम आरम्भ हो कर कई बार पिंडारी, गोरखपुर जिले के छितौनी व घोड़टप के जंगलों, उत्तर काशी के पहाड़ी मार्गों, ऋषीकेश, अहमदाबाद, हरिद्वार, काशी, उत्तरकाशी, टेहरी प्रान्त के पहाड़ी जंगलों में होते हुए पुनः इस बार काशी में आन भिड़ा है। यद्यपि यहाँ दुष्ट-सेना बहुत कुछ भयभीत हो रही है, तथापि हमारे कलेजे के पास मोर्चा जमाये डटी हुई है। समयानुसार कुछ-कुछ शस्त्र-प्रहार भी जब तब कर देती है। दुष्ट देव-राक्षसों का सरदार सब तरह से विवश हो कर हमारे शरीर से बाहर होते समय कलेजे की अन्तिम पूर्ण महा काट करने का दृढ़ संकल्प कर के कभी रो कर, कभी गाली दे कर, कभी शूल देकर नाना प्रकार से ध्यान-बाधक युद्ध-नृत्य कर करा रहा है। हमारी तरफ से भी अन्तिम कलेजा के काट वास्ते मोचना द्वारा मांस नुचवाने की प्रतिज्ञा की गई है। उसकी (दुष्ट-सरदार की) प्रतिज्ञा है कि, वह जब तक शरीर के भीतर है दुष्टता द्वारा वैर साधेगा, जब शरीर से बाहर निकाल कर हम लोगों के अधिकार में आवेगा तब खूब रोने, चरण पर गिरने, प्रार्थना करने की चालाकी द्वारा, हम लोगों के दंड-संकल्प और प्रतिज्ञाओं को नष्ट करने वास्ते दीनता दिखाना रूप पुरुषार्थ या युद्ध करेगा। उसका विश्वास है कि अपनी दुर्गा मैया के बल से वह हम लोगों के सभी दंड-संकल्पों को निष्फल कर देगा। यह उसकी बारम्बार की ललकार है। इसी के भरोसे वह हमारे शरीर को विदीर्ण करने का बहुत काल से पुरुषार्थ करता आ रहा है। अपने पुरुषार्थ के बदले उसकी मनसा थी और है कि या तो वह हमें मार डालेगा या दुर्गा के अधीन कर लेगा या हार कर, हमारे लोक में जन्म ले कर दंड पाने के बदले हमसे क्षमा-दया प्राप्त कर हमारा लौंडा या स्त्री पद पाना रूप इनाम प्राप्त कर लेगा। अतः युद्ध में उसे भय की अब आवश्यकता ही क्या है ? इसी पुरुषार्थ और इनाम

के विश्वास पर उसके जगत के लोग बहु संख्यक योगियों को मारते व विजय करते आ रहे हैं। अब भू-लोक-वासी जनता विचारे कि ऐसे मनमुखी पुरुषार्थ करने और विश्वास रखने वाले पाँच खरव देव-राक्षसों के सामने उनका धर्म या जीवन के दिन का है ? सत्य तो यह है कि, भागने को कहने पर शरीर से नहीं भाग कर समाधि नष्ट करने की उपाय करना और पुनः क्षमा-दया की आशा रखना यानी दण्ड से बच कर लौंडा-स्त्री बनने की लालच करना दुष्ट-समूह की मूढ़ता और दुष्टता का लक्षण है; क्यों कि दुष्टों पर क्षमा-दया कर के यह शरीर अपने भावी, इस भेद से अनजान, निर्दोष योगियों की, उर्ध्व लोक-वासियों द्वारा, हत्या का मार्ग नहीं बनायेगा। इस कारण हमने भी प्रति सेकन्ड समाधि-हानि के बदले ५ वर्ष की उल्टी, नंगी शूली का दृढ़ संकल्प किया है और इस प्रकार अकारण महा अत्याचार सहते हुए यह धर्मोद्धारक युद्ध चल रहा है। समाधिवानों की, योगियों की, धर्म की रक्षा ही इसका मुख्य उद्देश्य है। यदि शरीर-प्रवेशकों का महा दंड न होगा तो आगामी योगियों का संकट इससे भी भयंकर होगा; क्यों कि दण्डनीय शरीर-प्रवेशकों पर दया का फल निर्दोष 'योग-साधकों की हत्या' हो रही है।

ॐ देव-राक्षसों द्वारा इस शरीर को घूस की लालच :—बारम्बार आप के जगत के प्रचंड पुरुषार्थी योगी लोग धर्मोद्धार के कार्य करने के लिये अवतार-पद ग्रहण करते हैं। प्रायः प्रत्येक वार इन उर्ध्व लोक-वासी देव-राक्षसों यानी शरीर-प्रवेशकों से इसी प्रकार आप के अवतारों को महान् कष्ट उठाना पड़ता है। मगर आलस्य और अज्ञानता (राक्षस-भेद-अनभिज्ञता) तथा कोई-कोई इन बुद्धि-प्रेरक राक्षसों की महान् घूस एवं कष्ट-भय कारण देव-राक्षसों की दुष्टता का यह भेद और अपने लोक पर उनका गुप्त आधिपत्य जनता में न तो प्रकट करते हैं, न अपनी धर्म-रक्षा वास्ते उनका अपने लोक-बासियों के शरीरों में से बहिष्कार ही करते हैं। जब देव-राक्षस लोग इस युद्ध में हारने लगे हैं, तो प्राण-हत्या करने की आशा छोड़ राज-पाट, कंचन-कामिनी की घूस देने चले हैं। यदि मृत्यु-लोक पर उनका अधिकार रहने दिया जाय तो वे इस शरीर को अमेरिका, योरप और एशिया के सभी राष्ट्रों साथ भू-लोक के सभी महाद्वीपों का राज्य एवं अपार कंचन-कामिनी देने को तैयार हैं। अब आप लोग विचार कीजिये कि इस युद्ध का देश पर क्या प्रभाव होगा ? इसका महत्व कितना महान् है ? शरीर-प्रवेश सदा ही योगी-हत्यारा है ! देव-राक्षसों की प्रत्येक अवतार के समय राज्य-रक्षा करने की सबसे अन्तिम अकाट्य उपाय आप के जगत के बहुत बड़े राज्य और बहु संख्यक युवक लड़के-लड़िकियों साथ गुंडे-बाजी, रंडी-बाजी करने का गुप्त लाभ प्राप्त करा

देना है। जिसके लोभ में पड़ कर अवतार गण उनका राज्य छोड़ देते हैं और जिससे उनकी आयु शीघ्र क्षीण हो जाती है। यही बात हमसे भी कही जा रही है कि, "सारे भू-लोक भर के सुन्दर-सुन्दर युवक-युवतियाँ, स्कूलों-कालेजों के विद्यार्थी लोग बुद्धि प्रेर कर तुम्हारे यहाँ ला दिये जाते हैं; खूब गुंडे-बाजी, रंडी-बाजी करो; यहाँ तक कि पुरुषों से ही सन्तान उत्पत्ति करो! मगर देवों के शरीर-प्रवेश द्वारा गुप्त राज्य का अन्त मत करो।" इस बात के पक्ष में देवों की, परमेश्वर के नाम से बनावटी नभ-बानी व संकेतों का अन्त नहीं है। मगर तपस्या को बलात् भ्रष्ट कर के साधुओं की निन्दा अज्ञानी-मूढ़ गृहस्थियों द्वारा कराने वाले इन दुष्टों का यह सर्वथा अधर्म-मय बचन यह शरीर न मान कर उनका संहार ही कर के छोड़ेगा। इसी महान् धर्म-रक्षा के संकल्प रखने एवं देवों के बचन न मानने पर इस शरीर की रात-दिन महान् दुर्दशा, शूल, खोंचा, मुख में टट्टी-पिशाब किया जा रहा है। साधुओं का निरादर मूढ़ गृहस्थियों व शासकों द्वारा, भारत की महान् दुर्गति—इन सबका मूल कारण इन दुष्टों को देख कर यह शरीर इनका समूल संहार ही परम धर्म मान रहा है।

ॐ नोट :—चूंकि महा पुरुषार्थी, महा विरक्त, जीवों के महा-महा कल्याण-कामी भगवान बुद्ध देव भी प्राचीन महर्षियों से सम्मति नहीं लेने के कारण और इन गुप्त शरीर-प्रवेशक बुद्धि-प्रेरकों की धूर्तता कारण सर्बाधिष्ठान पुरुष की निजी बाणी एवं सत्य सिद्धान्त प्राप्त करने, पहचानने में धोखा खा गये; अतः हम सभी को बहुत सावधानी की आवश्यकता है। क्योंकि उक्त सर्बोपरि पद के बाद त्रिगुण-मय-ब्रह्म, त्रिपुटी के ईश्वर, सगुण निराकार ईश्वर, सनातन पुरुष के नाम से बोलने वाले बहु संख्यक लोग हैं, जो बार-बार सर्बाधिष्ठान पुरुष की तरफ से बनावटी नभ-बानी करने वाले हैं। दूसरे ईष्ट की तपस्या दूसरे लोक के लोग झूठ-मूठ पूर्ण करते-फिरते हैं। छल करने वास्ते छोटे-बड़े सभी लोग आप के शास्त्रों की बातों को कंठस्थ रखते हैं। आप के जन्म भर की हर एक बात को वे लोग याद रखते हैं। इसी कारण मुझे भगवान बुद्ध की तप-पूर्त्ति में संशय हो रहा है; क्यों कि शरीर-प्रवेश रूप राज्य एवं ईष्ट-पद की चाहना वाले सूक्ष्म जगत-बासी लोग बड़े ढीठे, स्वार्थी, बड़ी-बड़ी शक्ति रखने वाले हैं। बुद्ध देव के धोखे का प्रमाण शांकार वेदान्त से भिन्न उनका अनुभव, धर्म व वेदान्त-सिद्धान्त है; क्योंकि इस शरीर के अति गहन, महा-महा कष्ट-साध्य अनुसंधान उपरान्त शांकर सिद्धान्त ही सत्य निकला है। यही सर्वथा सत्य है।

ऐसा ज्ञात हो रहा है कि बहुतेरे तपस्वियों का तप आज कल सूक्ष्म जगत

के शरीर-प्रवेशक चोरों द्वारा झूठ-मूठ पूर्ण कर के बन्द कर दिया गया है। सर्वाधिष्ठान पुरुष बोलने ही नहीं पाये या बोले ही नहीं, क्यों कि तपस्या में अभी कमी है। तब तक दूसरे किसी ने पूर्णता का चिन्ह दिखा कर तपस्वी को उठा दिया। एक-एक नाम के पूर्व काल में इन दुष्टों द्वारा ठगे हुए बहुत-बहुत काकभुशुंड, लोमश, शुकदेव, ब्यास आदि महा पुरुष लोग हो गये हैं। अतः अनदेखे अपने प्राचीन ऋषियों-मुनियों का पूर्ण परिचय पहले ज्ञात कर तब सम्बन्ध स्थापित करना उचित है; क्यों कि प्रत्येक के ज्ञान व योग-शक्ति में बहुत-बहुत अन्तर है। इस शरीर ने इसी धोखे से रक्षा वास्ते तथा विघ्न-निवारण, शीघ्र-विजय और गूढ़ विषयों में सम्मति लेने वास्ते महा-महा प्राचीन, अति शक्तिवान, समाधि-समुद्र, समाधि के आचार्य सुमेरु पर्वत-निवासी लोमश मुनि का अवाहन किया है; ताकि उनके द्वारा विघ्न-निवारण हो कर, घनीष्ट सम्बन्ध स्थापित होय सम्पूर्ण रहस्य ठीक-ठीक ज्ञात हो कि, सर्वाधिष्ठान परम पद के नीचे कौन-कौन शक्ति, अस्तर और तत्व-पद हैं। अन्यथा दुष्ट-दमन वास्ते तो अपना पुरुषार्थ ही पर्याप्त है। इस दुष्ट-दमन-कार्य के बाद सृष्टि में अविनाशी सम्प्रदाय प्रकट होगा। जो गृहस्थ साधुओं की सेवा व भिक्षा देने से जी चुराता है वह चोर है; क्योंकि सृष्टि साधुओं की है, न कि गृहस्थों की। सृष्टि के स्वामी परमेश्वर साधु हैं; उन्होंने समाधि से सृष्टि रची है। अन्तिम सृष्टि-रचक भी साधु ही हैं; अतः टैक्स रूपी साधुओं के राज्य की साधु-भिक्षा न देने वाला निश्चय चोर है।

ॐ योगी बड़ा या सम्राट :—योगीश्वर गोरक्ष नाथ का कथन—राजा भरथरी से—"ऐ भारत के सम्राट ! तुम लोग जनता को बनाते-बिगाड़ते हो; हम योगी लोग तुम सम्राटों को बनाने-बिगाड़ने की खेल खेलते हैं। मेरे पालतू हिरन को तुमने मार दिया है, सो किस हिम्मत-हक से ? मार वही सकता है जो जिला सकता है। तुम (राजा लोग) केवल मार सकते हो; पर योगी मार भी सकता है, जिला भी सकता है; अतः तुम (राजा लोग) मारने का हक नहीं रखते।"—अतः योगी बड़ा है सम्राट से।

ॐ स्मरणीय सूचना :—(१) जैसा चौथे पेज के नोट में लिखा गया है आप लोगों के शरीरों में, सम्पूर्ण भू-मंडल (मृत्युलोक) भर में देव लोकों की, देवयोनि की तीन गवर्नमेंटें एवं बहुतेरी रियासतें अपने शरीर-प्रवेशक पुलिसों और महा अज्ञानी-मूढ़-दुष्ट प्रजाओं द्वारा नाक-कान की राह गुप्त शरीर-प्रवेश करके आप के मन पर कड़े पहरे के द्वारा आप की आत्म-शक्ति (योग-शक्ति या धर्म-शक्ति) को अपने अधिकार में रखते हुए राज्य कर रही हैं। आप से रक्त-वीर्य-रज,

नरम मांस एवं पूजा-ऐश्वर्य (भक्ति-गुलामी) की प्राप्ति उनका टैक्स है। उनकी गुप्त बुद्धि-प्रेरनानुसार या उनका भक्त होने पर उनकी प्रत्यक्ष आज्ञा के अनुसार जप-तप-समाधि सीमा (कन्ट्रोल) के भीतर रखते हुए, पूजा-बन्दना करते हुए अपने लोक में ब्यवहार करना उनकी आज्ञा (हुकूमत) माननी है। ये ही उर्ध्व लोक-बासी शासक लोग अपने गुप्त शरीर-प्रवेश एवं गुप्त बुद्धि-प्रेरना द्वारा नाना प्रकार की बीमारी, कष्ट, झगड़ा, बाद-विवाद, नाना धर्म-सिद्धान्त, राग-द्वेष तथा प्राण-घातक, कष्ट-प्रद चालों द्वारा आप पर शासन कर रहे हैं। तात्पर्य यह कि आप के लोक के उपर्युक्त दुर्गुणों का सबसे मुख्य कारण ये ही कलियुग-पक्षपाती शरीर-प्रवेशक लोग हैं। अतः समाधि या धर्म के प्रत्यक्ष घाती इन दुष्टों का उसी प्रकार निर्भय हो कर वध करिये जैसे शंकर ने कामदेव और कपिल मुनि ने सगर-पुत्रों का बध किया।

(२) कोई भी किसी का भविष्यत् अक्षर-अक्षर निश्चय नहीं कर सकता। अतः सदा भाग्य-ईश्वर-दैव का भरोसा छोड़ समाधि रूप महा पुरुषार्थ करिये।

(३) देव-राक्षस लोगों की बुद्धि-प्रेरना से ही ब्रिटिश गवर्नमेंट की सभाओं में सनातन धर्म के विरुद्ध कानून बन रहे हैं। जिसे सर्व शक्तिमान गवर्नमेंट सनातन पुरुष परमेश्वर कभी भी स्वीकार नहीं करेंगे।

(४) देव-राक्षस लोग कांग्रेस-संस्था के समान 'धर्म-संग्राम' नामी इस परमेश्वरीय संस्था के कार्यों में भी अँग्रेजी गवर्नमेंट के द्वारा हस्ताक्षेप कराना चाह रहे हैं। अतः धर्म-संग्राम भलाई की दृष्टि से यह सूचना दे रहा है कि अँग्रेजी गवर्नमेंट इस कलंक से बची रहे; क्यों कि यह सर्व शक्तिमान ॐ नामी गवर्नमेंट धर्म-भजन का लोभी है; राज्य का नहीं तथा इसने धर्म-भजन के विरोधी, प्रह्लाद के शत्रु, महान् शक्तिमान हिरण्यकश्यपु नामी गवर्नमेंट को अच्छी तरह से देख रखा है, जिसके राज्य में बारहो महीना बसंत ऋतु रहती और नदियाँ डर कर दूध की बहती थीं।

(५) देवराक्षस लोग बहुत से महात्माओं का जाप यह संस्कार दे कर रोक दिये हैं कि आत्मा राम तो स्वयं जाप कर रहे हैं, हमें जाप करने की क्या आवश्यकता है ? और जब कभी किसी के उपदेश से उनकी दृष्टि हृदय की ओर जाती है तो उन्हें धोखा देने वास्ते वे (राक्षस लोग) स्वयं दो-चार मिनट तक जाप कर के उसे फुसला देते हैं। शरीर-प्रवेशक चोरों के इस भेद को न जानने वाले साधु लोग जानते हैं कि सचमुच उनके हृदय में अपने आप नाम-जाप हो रहा है। अतः वे जाप नहीं करते, बस चोरों को परमेश्वर भी नहीं हटाते हैं। अतः

हमारे महात्मा लोग जब तक राक्षस हैं स्वयं जीभ हिला कर जोर से जाप करें।

(६) ॐ यदि कोई पूछे कि भारत देश की दुर्गति, शक्तिहीनता का प्रधान कारण क्या है, तो उसका सबसे उचित उत्तर यही होगा कि देवों का अपनी राज्य-रक्षा वास्ते धर्म-मार्ग (समाधि) में विघ्न-दायक होना।

(७) ॐ इस लेख के १७ वें पेज में 'महात्मा के सदा ऊँचे स्वर से प्रणव-जाप करने का कारण' नामक पाठ (सुरुखी) में 'बुद्धि' शब्द पर अंकित नम्बर १ का नोट वर्णन—इसी प्रकार इन राक्षसों ने आप के लोक के बहुतेरे अमीरों, पंडितों और योग-साधकों को बलात् और अकारण यहाँ तक कि किसी-किसी को अपने मनोरंजन तक के लिये भी पागल बना कर उनके जन्म-जन्मान्तर और उनके कुटुम्बियों तक को चौपट कर दिया है। बुद्धि में संस्कारों द्वारा इन्हीं दुष्टों ने पागलपन का कारण बहुत विद्या पढ़ना या दिमाग में गर्मी चढ़ जाना या भजन-क्रिया में बहुत परिश्रम करना आदि-आदि लोक में प्रकट किया है। पागलों के घरों की कितनी मातायें-बहिनें, स्त्रियाँ आदि भाग्य का दोष दे कर रोते हुए जन्म व्यतीत कर रही हैं। नाड़ी बन्द करने के द्वारा बहुसंख्यक प्राणायाम-अभ्यासियों को प्राणायाम के सिर दोष मढ़ कर, दम्मा दे कर, जन्म भर रुला-रुला कर मार डाला है।

(८) ॐ १७ वें पेज के उसी पाठ के 'जमघट' शब्द पर अंकित नम्बर २ के नोट में—जमघट का दूसरा कारण यह है कि राक्षस-दल मेरी वृत्ति-प्रवाह में धीमे स्वर की, बनावटी, पागलपन-पोषक अपनी वृत्ति का प्रवाह मिला कर मुझे पागल बनाना चाहता है। सिवाय समाधिवान विज्ञानी के दूसरों की बुद्धि राक्षसों की इस बनावट के सामने सर्वथा उड़ (समाप्त हो) जाती है। तब हृदय-प्रविष्ट राक्षसों की गुप्त बोली को ही वे अपने अंतःकरण की बुद्धि जान कर बाहर प्रयोग करते हैं। आज कल की औषधियों के प्रयोगों-विधियों को भी बुद्धि-प्रेरना के द्वारा ही इन राक्षसों ने गड़बड़ कर दिया है। जिससे उनकी सत्यता-गुण कलि में नष्ट हो गया है।

(९) ॐ इस लेख के १८ वें पेज में 'क्षमा-दया मत विचारिये' नामक पाठ में 'प्रत्यक्ष' शब्द पर अंकित नम्बर १ के नोट में—चूँकि भगवान बुद्ध ने अपने लोक में प्रकट कर जनता के सामने प्रत्यक्ष में इन दुष्टों का दण्ड नहीं कराया इस कारण अधिकांश जनता इस राक्षस-भेद से अनजान रह गई। उसी का फल है कि हमारी बात में, लोगों का विश्वास नहीं हो रहा है। मेरे द्वारा श्री युद्ध राक्षसों के राक्षसी भाव को सुन कर जनता गीता-कथित "दैवी-आसुरी सम्पदा" की शंका में पड़ जाती है। अतः आगे के ऐसे अवसर की शंका-निवृत्ति वास्ते यह

शरीर अपने लड़ैता राक्षसों की मृत्यु-लोक का शरीर दे कर आकाश में सबके प्रत्यक्ष शूली दे कर स्थित करेगा, ताकि सब लोग यह जानते रहें कि ऊपर के लोक-बासी लोग इस प्रकार हमारे लोक में आ कर दुष्टता करते हैं।

(१०) ॐ २१ वें पेज के 'सहायकों' शब्द पर अंकित नम्बर १ के नोट में—जो सच्चे धर्म-निष्ठ लोग हैं वे इन राक्षसों की धमकी-उत्पात् से भयभीत न हो कर दृढ़ विश्वास और शूरता साथ इस संग्राम में सहायता कर रहे हैं, और इनाम के भागी हो रहे हैं।

(११) ॐ दुष्टों की दुर्गा-बर्णन—जैसा पहले कह आये हैं सूक्ष्म जगतों में नव दुर्गा के सिवाय बनावटी दुर्गा या दुर्गा के गण-भक्त होने से दुर्गा नाम के अहंकारी बहु संख्यक लोग हैं और लगभग सभी लोकों की सारी शरीर-प्रवेशक मंडली दुर्गा का भक्त है। वे लोग परमेश्वर के बाद वाली प्रथम शक्ति को भी दुर्गा के ही नाम से पुकारते हैं। एक शरीर-प्रवेशक दूसरे शरीर-प्रवेशक को दुर्गा के ही नाम से युद्ध-काल में सहायता वास्ते पुकारता है; क्यों कि सारी शरीर-प्रवेशक मंडली भू-लोक पर दुर्गा नाम से एक संगठन में हो कर आक्रमण करती है। अत्याचार करने की सुविधा वास्ते सारा शरीर-प्रवेशक दल यह निश्चय किये हुए है कि भू-लोक-बासियों पर दया करनी पाप है और जब योग-तप भ्रष्ट करना होता है तो सभी लोग यही नीति ले कर लाखों-करोड़ों की संख्या में अकेला, बिचारे योगी पर आक्रमण करते हैं, जिससे वह बिचारा यदि सनातन पुरुष सहायता न किये तो मार ही डाला जाता है। क्यों कि बुद्धि-प्रेरना द्वारा देवों का टट्टू बनी हुई भू-लोक-बासी जनता उस बिचारे योगी का युद्ध में सहायक नहीं हो पाती। सभी शक्ति, ईश्वर, देवलोग भी दुर्गा नाम के ही पक्ष में हो जाते हैं; परमेश्वर-भक्त परमेश्वर से धर्म-कानून-बन्धन कारण और निज लोक-बासी जनता से जनता के इस भेद से अनजान होने के कारण कुछ भी सहायता न पा कर दुष्टता की श्रेणी पर पहुँचे हुए, शरीर-प्रवेशक जीन, मरूही, यक्षिणी आदि महा दुष्टों द्वारा मार ही डाला जाता है। परमेश्वर इसका बदला कल्पान्त में लेते हैं। अतः गुरुओं की शरण हो कर परमात्मा को पुकारो, अकेले पुकारने में या सूक्ष्म-जगत-बासी ईष्ट रखने में महान धोखा है। पता नहीं चोरों की संख्या-शक्ति कब कितनी है। अतः देवों को पूज कर उनके दूत शरीर में बुला कर धर्म का नाश मत करो तथा इस युद्ध में पकडे हुए दुष्टों के दण्ड करने में कसर मत करो। याद रखो यदि कोई दुष्ट मार कर तुम्हारे लोक में कभी लाया भी जाता है तो उसका बदला चुकाने में और उस दुष्ट की सहायता में शेष दुष्ट लोग पुनः महा पुरुषार्थ करते

हैं और हमारे युद्ध के दुष्टों का भी विश्वास है कि शक्ति-ईश्वर लोग दंड-काल में दंड-कर्त्ताओं को क्षमा-दया के संस्कारों द्वारा रोकेंगे। अतः अपने परम हितू केवल सनातन पुरुष को पूज कर इस अत्याचार से बचो।

(१२) ॐ धर्म-परिभाषा—श्री सनातन पुरुष परमेश्वर (जिन्हें धर्म के स्वामी होने से धर्म भी कहते हैं) की बनाई हुई कानूनों, नियमों, कार्य करने के मार्गों को सनातन धर्म के नाम से कहते हैं। ये धर्म-कानून कभी-कभी परमेश्वर द्वारा और कभी-कभी परमेश्वर के सच्चे भक्तों द्वारा (देव, ईश्वर, शक्ति की भक्ति से रहित ब्रह्म-भक्तों द्वारा, दूसरों की भक्ति संयुक्त ब्रह्म-भक्त लोग शुद्ध-अशुद्ध-मिश्रित कानून बताते हैं) लोक में प्रकट किये जाते हैं। परमेश्वर के पास पहुँचने के और उन्हें प्रसन्न करने के जो कार्य या मार्ग हैं उन्हें भी धर्म नाम से कहते हैं।

ॐ धर्म के कानून की पुस्तक—परमेश्वर या धर्म के कानून की पुस्तकों को ही 'धर्म-शास्त्र' कहते हैं। उदासीन सम्प्रदाय की 'सुखमनी' नामक पाठ-पुस्तक एक अद्वितीय धर्म-कानून की पुस्तक है। उसी के अधिकांश कानूनों के अनुसार यह धर्म-युद्ध विजय हो रहा है।

ॐ परमेश्वर ही, जिनका असली नाम 'ॐ' है, सर्व प्रथम के, सबके असली मालिक और सनातन (तीनों काल के) सर्व शक्तिमान गवर्नमेंट हैं। उनके बाद उनके अधीन अन्य ईश्वर या गवर्नमेंट लोग हैं। अतः सबसे पहले परमात्मा यानी धर्म से डरो। सूक्ष्म लोकों में ईश्वर एक पद है।

यह 'धर्म-संग्राम' नामी संस्था परमेश्वर की निजी संस्था है, जो हर कल्प के अन्त में ब्रह्मांड भर के विकारों को दूर करने वास्ते परमात्मा द्वारा संचालित होती है। इस कल्प के आरंभ में आप के आकाश में विद्यमान 'सूर्यदेव' इस संस्था के कार्य-कर्त्ता थे।

ॐ सूक्ष्म लोक-वासी शक्ति, ईश्वर, देव कोई भी ईष्ट जब कभी धारण होगा तो उसकी भक्ति-कार्य देखने वास्ते उसके लोक के निवासी उसके नौकर जो महा अज्ञानी रहेंगे, अवश्य शरीर में आयेंगे; बस, तुरन्त आप के मन में अधर्म-अज्ञान प्रवेश करेगा; क्यों कि संग-दोष व्यापेगा। तथा नौकरों की देखा-देखी फिर रक्त-वीर्य के लोभ से चोर-डाकू, अवारे, बीमार, व्यभिचारी लोग भी शरीर में आ घुसेंगे। अतः अन्तिम उपदेश यही है कि ईष्टों की भक्ति छोड़ विशुद्ध ब्रह्म-भक्त महात्मा की शरण होय केवल परमात्मा को पूजो। "जो इच्छे सोई फल पावे, 'ॐ'-जाप नहिं बिरथा जावे।"

॥ ॐ धर्म ही प्राण है ॥